प्रकाशने दूर करवाने माटे, तथा नवजीवो शुद्ध धर्म पामी शके ए माटे आ श्री ग्रन्थ आचार्यजी रचित ग्रन्थ, प्राचीन तेमज प्रमाणयुक्त अमारा जोवामां आववाथी वर्तमान समयनी अंदर अति उपयोगी थइ रहेवाना हालनी घणा (पुष्कळ) जीवोनु सुधारो ए हेतुने ध्यानमां लइ आ ग्रंथ मुद्रित (छपावयो) छे हालना समयनी अंदर मनुष्यो धर्मनी शोध खोळ करी रह्या छे अने जमानो पण जाय पणावाळो थतो जाय छे तेथी जमानामां आवा निष्पक्ष पाति प्रमाणयुक्त ग्रंथ प्रसिद्धिनी खास जरूरज छे।

अनन्य श्रद्धालु थवुं, पण अंधश्रद्धालु न थवु एज श्रेयस्कर छे केमके अंधश्रद्धालुर्ननु मानवु एवु होय छे के- जसे साचु होय के जुठु होय पण अमोए तो जे अंगीकार कर्यु तेने कदी छोडनार नथी आम पकडेला शास्त्रापुरुषनी पेठे आज काळनो केटलोक अंधश्रद्धालु- द्दष्टिरागी वर्ग अज्ञानताना वशे करीने सत्यप्ररूपक सद्गुरु तरफ धिःकारनी नजरथी जोतो थयो छे, के जे सत्यवक्ताना सर्टक वचनोने हसी कदाग्रह लाग्‍ द्दष्टिपथमां पडवा लाग्यो छे, ते वर्गने आ ग्र अत्युपयोगी थशेज! माटे विवेकी वाचकवर्ग द्दष्टि रागथी दूर रही तत्वग्राहिणी द्दष्टिवडे आ ग्रन्थनी इति लगी वांची विचारी मनन करी

तत्व संचय करवामा राग द्वेषना फदमां न फसातां स्वपरना आत्मानु कल्याण करशेज एवो अमने पूर्ण विश्वास छे। अने एम थशे तो अमारो प्रयत्न पण सफळज छे—मतलब के "दक्ष परीक्षक जो मळशे तो छे श्रम सफळ अमारो।"

आ ग्रथनो विषय शु छे ते तो वाचकवर्ग आद्यो-पान्त आ ग्रथनु अवलोकन करतांज आपोआप समजी ले तेम छे, जेथी नाहक विष्टपेषण करी कीमती काळनो व्यर्थ व्यय करवो ते अनुचित छे

प्रिय पाठक महाशय! आ ग्रथना कर्त्ता सौधर्म-गछीय शास्त्रविशारद मुनिमहाराज श्री ब्रह्माचार्यजी के जेमनो जन्म मालवाना आजणोठ नगरमा जैमोलकी क्षत्रीवीर पद्मदेवराय पिता, तथा सीनादेवी माताने त्या उत्तम महूर्तोमें थयो हतो. अने जेमणे कि-शोरवयमाज पूर्वसचित पुन्यप्रकृति सयोगवश पोताना भाइ साथे मातापितानी रजा मेळव्या शिवाय द्वार-काजीनी यात्रा करवा माटे प्रयाण कर्यु हतु "शुभात् शुभ जायते" ए कहेवत मुजब एवु थयु के मार्गे चालता चालता गिरनार पर्वतना प्रदेशमा पूर्व पुन्योदय प्रभाव के जैनाचार्यनी तेमने भेट थई मुनीने वदना करी पोते तेमनी अगाडी बेठा, एटले मुनिवर्ये हलुवाकर्मी

योग्यजीव जाणीने शुद्ध धर्मोपदेशनो लाभ आप्यो एथी ते वचनामृत पान करता मनमा वैराग्यभाव जन्म मल्यो, एटलुज नहीं पण ते वैराग्ये सत्य वैराग्य नी दीक्षा लेवानी तेमने फरज पाडी के तेमणे पण द्वारका जवानु द्वार बध करी जन्मोद्धार करवानुं द्वा खोलवा मन दीधु. धार्युं हतु शु अने थयु शु "वाह! भवितव्या! तारी प्रबलता!" एटले के धार्यो हतो द्वारका दर्शननो लाभ अने शुद्ध चारित्रनं लाभ थयो गुरुश्रीए नाम राख्यु ब्रह्ममुनि, केमके भविष्यमा परंब्रह्मज्ञानना वा परब्रह्म (वीतराग भाषित ज्ञानना ज्ञाता थनारा होवाथी प्रथमथीज ज्ञानदृष्टिवळे ते नामनुज पद समर्प्युं तदनंतर गुरु राजे पोताना बक्षेला नामने सार्थक करवा माटे मुनि धर्म योग्य क्रिया-अनुष्ठानना सूत्र (सिद्धांत-तत्त्व नो अभ्यास कराव्यो, अने ते पछी तेमणे (पोते) अन्य महान् आचार्य पासेथी पोतानी प्रबल बुद्धिना योग थी घणाज तत्त्वज्ञाननो संग्रह कर्यो अने समर्थ शा विशारद बिरुदवंत थया एथी श्री वृद्धतपागछाचा श्री विजयदेवसूरिजीए तेमने सूरिमंत्र अर्पी ब्रह्मा चार्य नामथी भारतभूषण तरीके जिनशासनमार्गमा स्थिर कर्या श्री विजयदेवसूरिना शिष्य श्री विनय- सूरि ते आ ग्रन्थकारना संसारिक संबधमा भा

हता, ए मार्गना प्रतापी मजकुर आचार्यजी परम निमल वेराग्यधारक साक्षरोत्तम-विद्वान्, नीवडी वैरागी जनोना मस्तकमौलि समान शोभापात्र गणाया हता ए सूरिजीए दशाश्रुतस्कंधसूत्रवृत्ति, जंबूद्वीपपन्नत्तिसूत्रवृत्ति, पाखीसूत्रवृत्ति, प्रतिमास्थापना प्रबंध, सुमतिनागिलनो रास, सैद्धांतिकविचार, चउपर्वी व्याख्या, स्तवनो, सझायो, कुलक अने प्रस्ताविक काव्य वगेरे वगेरे घणा रच्या छे एम केटलाएकनी तो श्रवणज साक्षी आपे छे, (मात्र नेत्रो साक्षी आपे एटलीज इछा छे) मजकुर आचार्यजी विक्रमनी पदरमी सदीमा विद्यमान हता तेमणे करेली ग्रंथे वृत्तियोने समर्थ गीतार्थोद्वारा संशोधन करावी श्री संघमां प्रचलित करेली छे, अने अनेक गद्यपद्यात्मक लेखो कायम करी चतुर्विध संघने आभारी कर्या छे ए पोते सौधर्मगछना हता एम अने उपर लखेल सर्व विना एमना करेला ग्रंथो उपरथीज प्रतीति मळे छे ऐंधीमा ऐतिहासिक ज्ञान प्रशसनीय हतु एम पण आ ग्रंथ कही आपेछे अने ते वाचवाथी अहारा सज्जन नासशे ए आचार्यजी हाल परलोकमा बिराजमान छता तेमना मधुरवचनो आ लोकमा बिराजमान रही सम्यग्दृष्टिजीवोने कल्याण कर्या करेश अने हवे पत्री पण प्रदा करे एवी अमारी इछा छे

आ पुस्तक छपावतां मारी छद्मस्थ मतिना योगे कंइ अक्षर कानो मात्रा मींडी या अर्थविभ्रमताना दोष रही गयेल होय तो ते विषे सज्जनो ईंसगत् गुणमा पद दोषने सुधारी वांचशे के जेथी अनंत लाभ थ कारण के "संत्यज्य सकलान् दोषान् गुणान् गृह्ण साधव" तथापि वाचकवर्गनी समक्ष दोष संबंधी विषे मिथ्यादुष्कृत दउछु. अलम् विस्तरेण शुभम

सं १९६७ माघ पूर्णिमा } प्रकाशक.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

श्रीसिद्धार्थनरेंद्रविश्रुतकुल–व्योमप्रसूतोदय
सद्बोधांशुनिरस्तदुस्तरमहा–मोहान्धकारस्थिति
ध्वस्ताशेषकुवादिकौशिककुल प्रीतिप्रणोदक्षमो
जीयादस्खलितप्रतापतरणि श्रीवर्धमानो जिन ।

ॐ शान्ति ॥ ३ ॥

आ छपरनु काव्य ग्रन्थना अतमां छे, परंतु छापवामां क अशुद्धता थइ जवाथी अहिं योग्य अक्षरमां मुद्रित करेल

॥ ॐ श्री वर्द्धमानाय नमः ॥

शास्त्रविशारद जैनाचार्य मुनिराज श्री प्रतापकृत–

श्री सुधर्मगच्छ परीक्षा ॥

(आर्या छंद)

जयति जगदेव मगल,–
मपहृत नि शेष दुरित घन तिमिरम् ॥
रविबिंबमिव यथास्थित,–
वस्तु विकाश जिनेशवच ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

र नमु कर अजलि करी, साधुतणा गुण मन सभरी,
चा धर्म परिक्षातणो, विगति कहु कांइ गछतणी ॥१॥
रतणा गणधर इग्यार, नव गछ तेहतणा इम धार,
च गणधरना गछ पच, पच पचसय मुनिवर सच ॥२॥
ठतणा अहुठ सय साध, सत्तम गणधरना इम साध,
इम नवम गणधर बे मिलि, साधु त्रसय जाणवे वली ॥३
ठ आठमो ए सुविचार, नवमानो हिव कहु विचार,
दम इग्यारम बे गणधार, त्रसय साधु नेहनो परिवार॥४
इग्यारे गणधरतणा, नव गछनी जाणो विवरणा,
एक गुरुनो परिवार, सत्रपाठ अतर अवधार ॥ ५ ॥

अरथ एक गणधर सवि कहे, एके आचारे सवि रहे,
जूजुआ सूत्रपाठ गछ हूआ, पुण आचारे नवि जुजुआ॥
वीरथका गणधर नव सिद्ध, पछे गोयम केवल सिद्ध,
आपापणा साधु सवि जेह, आप्या सुधर्मस्वामिने तेह
सौधर्मगछ एकज ते जाण, तेहतणी सवि माने
सूत्रतणी एकज वाचना, अवर पुण नहि आचा
केमो जे साचा साधुनो, सघलो ते सौधर्मस्वामि
कल्पसूत्रना वचन विमास, साजली श्री सद्गुरुनं

यतः–जे इमे अज्जत्ताए समणा
विहरंति ए एण सव्वे अज्ज सुहमस्स अ
रस्स अवच्चिज्जा ॥ अवसेसा गणहरा
वुच्छिन्ना ॥

भावार्थ –आजकालने विषे जे श्रमण निर्ग्रं
अलब्ध विचरे छे, ते तमाम भगवान् श्री सुधर्म
गारना शिष्य सतानीया जाणवा, बाकीना गण
शिष्य सतान रहित जाणवा

हिवणा जे दीसे गछ नाम, सूत्र न दीसे तेहने ठ
ठता कहे तेहने पूछजो, मन सदेह सहू टालजो
सामाचारिने आतरे, जो गछ कहेवास्ये पाचरे,
घउदहसय गावगो पोल

ण ए वात न पंडित कहे, पाठ फेर जे गच्छ सद्दहे,
ीतरागनो मत छे एक, जगवई वृत्ति जोइ विवेक ॥१४॥

यत —" यदेवमतमागमानुपातितदेवसत्य-
मितिमतव्यमितरत्पुनरुपे क्षणीयमथाऽबहुश्रुतेन
नैतदवसातु शक्यते तदैव जावनीय, आचा-
र्याणा समदायादिदोषादय मतभेदो जिनाना तु
मतमेकमेवाविरुद्धञ्च रागादिदोषविरहितत्वात्"

जावार्थः—जेनोज मत आगमने अनुसारे होय तेज
त्य गणाय छे एवी रीते मानवु जोइए—अने तेथी वि-
रीत जे होय तेने त्याग करवो जोइए हवे थहिं बहु-
त विना कोइ निर्णय करी शके नहि, ते माटे आवी
ते विचारवु जोइए के आचार्योनी सप्रदाय आदि
षय वडे करी आ मतजेद छे, परतु जिनेश्वरनो मत
कज अविरुद्ध होय छे, केमके रागद्वेषादि दोषरहित
जाथी तेओनो मत निर्दूषित गणाय छे, माटे तेज
गीकार करवो जोइए अने तेनाथी याय,
ा जे जिनागमथी विरुद्ध होय
ापन रसिकपणाथी ेय तेनो
रुप ने त्याग

काउसग्ग चैत्यवदननो फेर, दीसे किहा कोइ अधिके
सूत्रे जेहनी हा ना नहिं, तिह एकात न करीए रे
निरवद्यक्रिया सवेगीतणी, एक दीसे आपमति तणी
तिहपुणआजविचारीकरी, सत्यकरोकूडु परिहरी ॥१४॥
सूत्र अर्थछे शुद्ध आचार, सौधर्मगछ तेहनो अणुसार,
तेथी अवर मततर जाण, सूत्रअर्थ तिणे करो प्रमाण॥
नवला गछ नवला आचार, तिणें म राचो एक लगार,
सौधर्मगछनी पालो आण, जेथी पामो परम कल्याण॥
एह परपर छे निसदीस, वरस सहस्र ज्यालगी २१वर्ष
रहेशे सूत्र अर्थ आधार, जे पाले ते साधु विचार ॥ १७
नाम गछ ने सूत्र विरुद्ध, परपरा तसु म गणो सुद्ध,
सूत्र विरुद्ध गछ जे आदरे, ते जिनआण नग आन्दे
ठाणाअंगे एह विचार, सूत्र पथ गछ रीति धार,
चउभगी बोले जगदीस, ते जोइ मन धरशो रीस॥

यत —श्री ठाणागे ॥ चत्तारिपुरिसजा।
पन्नत्ता तजहा–रूम्मंणाममेगे जहति णो
ठिति १ गणठितिमेगे जहति णो धम्म
धम्ममेगे जहति गणठितिंपि ३, एगे णं
णो गणठिति ४

नाम–रूप–वड्वे रोकड तातुतो ५

, जिनाज्ञारूप धर्मप्रत्ये मुकी देछे, पण पोताना
मा करेली मर्यादाने मूकता नथी, जेमके कोइ
ाचार्य तीर्थंकरनी आज्ञाने एक बाजु राखी मर्यादा
ाथी के बीजा गछवाला साधुने महाकल्पादि अति-
ाय श्रुत भणाववु नही, ए आचार्यनी मर्यादा छे माटे
आमो बीजाने काइ पण भणावीयें नहि एम माने, पण
ए जिनेश्वरनी आज्ञा नथी जिनेश्वरनीतो एवी आज्ञा
छे के जो योग्य होय तो सर्व पुरुषो भणी श्रुत आपवु
पण अयोग्यने आपवु नहि मतलबके जिनेश्वरनो उप-
देश योग्य पुरुषप्रते आपवाने मनाइ नथी, छता गछाध
थे जिनेश्वरनी आणा उल्लघाय तो भले उल्लघो पण
आमे तो गछनीज मर्यादा राखीशु, इम कहे ते पहेलो
ो जाणवो अने बीजो भागो ए छे के गछनी मर्या-
ने मूके छे पण जिनेश्वरनी आणा मूकता नथी, ए
ाजो भागो जाणवो अने त्रीजो योग्यायोग्यनो विचार
जिनआणा तथा गछमर्यादा ए बन्नेने मूके, ते
ीजो भागो जाणवो अने चोथो तो विवेकपूर्वक कार्य
ारे, जेमके जिनेश्वरनी आणा तथा गछनी आणा बन्नेने
ाखी कार्य करे, ते चोथो भागो जाणवो
ण साहुणि श्रावक श्राविका, सघचतुर्विध सूत्रज थका
न आयरनी गिणुपरपरा, जे दीसे ते म गणो खरा॥१

सूत्र अरथ लोपीने जेह, परंपरा दाखे छे तेह,
जो सद्दहिये सूधा साध, तो निन्हवनो स्यो अपराध
पद अक्षर जिनआगमतणो,अनिनिजेप धरी लोपे घणो
तेनिन्हव कहिये अजाण, वीतरागना वचन प्रमाण ॥२२

यत –पय अखरपि इक । सव्वर्हि पजेइप॥
नरोएज्ज अन्नहा नासे । मिज्ज दिठि सनिच्छय॥१॥

भावार्थ –सर्वज्ञ देवाधिदेवे परूपेला ने ग॰
कनी परपराथी आवेला जे पद तथा जे अक्षर तेम
कोइपण एक अक्षर तथा पद तेनी श्रद्धा करे
अने तेथी विपरित परूपणा करे ते जीव निश्चे मि
दृष्टि जाणवो

पूरव आचारजनी आण, केइ कहे करिये परमाण,
तेहनणो उत्तर मन धरो, आचारजनी परीक्षा करो ।

यत –पच विह आयार। आयर माणा तह
भासता ॥ आपार दसता । आयरिया ते
वुच्चति ॥ १ ॥

भावार्थ –पाच प्रकारना आचार ते ज्ञानाचार
दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचा
ते प्रते पोते पालना तेमज यथार्थ सूत्रनी साक्ष प॰

ा तेमज ते पंचाचार प्रति मुनियोने देखाडता, इत्याआचार्य जे होय अने विपयनी दुष्टना तथा कषाय ्वता तेथी छोडावनारा ते हेतुथी आचार्य जगवान ्रुद्ध परुपणा करी जव्यजीवोना तारक तेनेज आचार्य जावाचार्य) कहेवाय छे

ाचारज पुण तेहज जाण, जे जाखे सुधी जिनआण, ाणविना आचारज जेह, कुपुरूषमाहे तेनी रेह ॥२४॥

यत –तित्थयर समोसूरी। जो सम्म जिणमय पयासेइ॥ आण अइक्कमंतो। सो–कापुरिसो– न सप्पुरिसो ॥ १ ॥

जावार्थ –जे आचार्य जिनमतना रहस्य तथा तत्त्व ादार्थ ज्ञानना रहस्य–मूल जूतसार प्रते सम्यक् जे ्पे, जे जावे जिनेश्वरे कह्या ते प्रमाणे प्ररूपे ते तीर्थकर ्मान गणाय वली जे परमात्मानी आणाने तोडता ाथी ते सत्पुरूष कहेवाय, अने पोतानी पूजा करवा ाटेज जेनी प्रवृत्ति छे ते कुपुरूष एटले नादान, पोते ुबे ने बीजाने डुबाडे ते नाममात्र आचारज जाणवा

मरस्थापना २नेद्रव्य ३ नाव४, आचारज विहुनेदेजाव, ्शुद्धत्रण जागा सूरिना, चउथे जाव धरो जावना ॥२५ ्रसुरिना लक्षण एह, सूत्राचारे वरते जेह, ्रपथ जे नर्वे नहीं, अशुद्ध त्रिजगी गणि ते ॥२६

यत –से नयव किं तित्थयर सतिअ आण
णाइक्कमेज्जा उदाहु आयरिय सतिअ ? गोयमा
आयरिया चउविहापन्नता तंजहा--णामाय-
रिया १, ठवणायरिया २, दव्वायरिया ३, भाव
यरिया ४, तत्थण जे ते भावायरिया तेसि सतिअं
आणा णाइक्कमेज्जा ॥

भावार्थ –हे भगवन् ! शु तीर्थंकर संबंधी
प्रश्ने न उपधाय के आचार्य संबंधी आणा न
पाय ? उत्तर हे गौतम ! आचार्य चार प्रकारना
गले–नामाचार्य १, स्थापनाचार्य २, द्रव्याचार्य ३,
चार्य ४ तेमा जे भावाचार्य छे ते जिनेश्वरनी
प्रमाणे वर्तनार होवाथी तेओनी आणा शोलघाय
ते भावाचारनी आण, तेनो लोप न करशो नाम
नाम मात्र आचारन छे, ते उत्तर गम राखो [illegible]
भावाचारन ने नाविया, सूत्र वगर जे ना । क्रिया
सूत्र वग जे क्रिया कर, ते नागा वा [illegible] ॥

यत –से नयव कयरेणं भावायरिया
[illegible] ? गोयमा ! जे अज्ज पव्वइवि आ
[illegible] पवयणाणुमराणि ते भावायरि

जेणं वाससएवि पव्वइए हुत्ताणं वायामित्तेणवि आगमउ वाहिं करेंति ते–नाम–ठवणाहिं णिज्जइयव्वे ।

भावार्थ –हे भगवन् ! कोण भावाचार्य कहेवाय ? हे गौतम ! जे आचारज आजनो दीक्षित पण सिद्धांत विधियें करी पद, पदप्रत्ये अनुसंचरे (चाले) ते भावाचार्य कहीये, अने जे सो वरसनो दीक्षित पण थइने आगमथी उलटो (आगमथी विपरीत) आगम बाह्य जे वर्ते ते नामस्थापनाचार्य साथे गणवो, एटले निर्गुण आचार्य ते नामाचारज, स्थापनाचार्य जेवा तेनी आणा पाळवी कही नथी

भावाचारज जे गछ माह, ते सुधर्म्मगछ जोइ आराह;
नाम मात्र गछगरज न सरे, जो परखी साचूं नादरे ॥२९
एक आण पाळे जिनतणी, करे कल्पना एक आपणी,
तेणकारण गछपरखो साच, रत्नपरोंसे म मल्यो काच ॥३०
नानी परि परखी करी, ओ गछ साचो ने संवरी,
मेळावे गछ न कहाय, आणसहित मोडे गछ थाय॥३१
यत –एगो–साहु–एगावि–साहुणी। सावगो

१ भ्रम

य सङ्घीत्रा ॥ आणा जुतो सघो । से सो पु
अछि संघाउ. ॥

भावार्थ –एक साधु, तथा एक साध्वी, तथा श्रावक, एक श्राविका, पण जो जिनेश्वरनी आणा, लनार होय तो सघ कहेवाय छे सम्यक् प्रकारे हणे ते सघ, तथा मिथ्यात्व कचराथी रहित थै; गते वस्तुनी श्रद्धा, परूपणा, प्रवर्तना, यथोर्ि कारक तथा पालक, स्वपक्ष परपक्षने विषे प्रनायक, तेमज आचार विचार, औदार्य, धैर्य, गानी चातुर्य, दाक्षिण्य, विनय, विवेकादि गुण जेमां होय सघ कहेवाय छे ते गुणहीन होय तो सघ न परंतु हाडकांनो ढगलो कहेवाय छे

भाव सूरी गछ आज्ञाराव, आगमनिशु रागनि टाल श्र य मते प्रभु जाणी करे, तो पुण नवतायर नवित

पन –जिणाणाण कुणा ताणं । नृणा [
काणाण ॥ मुदाणि रानुत्रिण । सघ नत निचध॥

भावार्थ –जिनेश्वरदेवनी आणा प्रमाणे जे जीव वर्ते मां निर्भ न प्राणी निवाणाव माधी हाडे वने ते प्राणी मनोमति आगमना वर्त तेनु सर्व

त मतार बधारनार छे.

ज्ञा जजिने त्रण काल, जिनपूजा मके सुविशाल;
तु पण फल पामे नहि, जुर्ज लाख विचारी सही॥ ३३

यत —आणा खंडणकारी । जइवि तिकाल
हा विजूइए ॥ पूएइ वीयरायं । सवपि
नरत्थयं तस्स ॥ १ ॥

जावार्थ—वली जे जीव लोके त्रण काले मोटी
ञूतिथके वीतरागदेवनु पूजन करे छे छतां जिनेश्वर-
नी आणानुं खंडन करे छे अने वली मात्र उपदृष्टिये
दवाइ कहेवरावबामाज आनद माने छे, तेनु सर्व
नुष्टान तुषखंडनवत् निरर्थक छे, एटले जेम फोतरा
डनारने कमोदनो लाज मलतो नथी, तेम तेने पण
नुष्टाननो लाज मलतो नथी

जप संजम शीलविनाण, तसुफलपामे जो हुवे आण;
णविना पण ते न प्रमाण, आचारगे एह वखाण॥३४

यत —अणाणाए एगे सोवठाणा, आणाए
एगे निरुवठाणा, एयते माहोउ एय कुसलस्स
दसण इत्यादि.

जावार्थ—केटलाएक जिनाज्ञाथी विपरीत प्रवृत्तिवाला

य सड्डीरा ॥ आणा जुतो सघो । से सा ५
अदि संघाउ. ॥

भावार्थ —एक साधु, तथा एक साध्वी, तथा श्रावक, एक श्राविका, पण जो जिनेश्वरनी आणा धरनार होय तो सघ कहेवाय छे सम्यक् प्रकारे हणे ते सघ, तथा मिथ्यात्व कचराथी रहित थै गतें वस्तुनी श्रद्धा, परूपणा, प्रवर्तना, यथोचित कारक तथा पालक, स्वपक्ष परपक्षने विषे ... प्रभावक, तेमज आचार विचार, औदार्य, धैर्य, गार्म चातुर्य, दाक्षिण्य, विनय, विवेकादि गुण जेमा ... सघ कहेवाय छे ते गुणहीन होय तो सघ न कहे... परतु हाडकानो ढगलो कहेवाय छे.

भाव सूरी गछ आज्ञापाल, आपमतिसु सगनि टा...
आप मते जहु जाणी करे, तो पुण भवसायर न...

यत —जिणाणाए कुणा ताणं । नूण ...
कारण ॥ सुंदरपि सवुद्धिए । सव्व भव [...५५०

भावार्थ —जिनेश्वरदेवनी आणा प्रमाणे जे जीव वर्ते तो निश्चे ते प्राणी निर्वाणपद साधी ... अने जे प्राणी मनोमति आपमतीये वर्ते तेनु सर्व

ान मसार वधारनार छे

ाज्ञा त्रजिने त्रण काल, जिनपूजा मध्ये सुविशाल;
इनु पण फल पामे नहि, जुर्ज लाख विचारी सही॥ ३३

यत –आणा खडणकारी । जइवि तिकाल महा विभूइए ॥ पूएइ वीयरायं । सव्वपि निरत्थयं तस्स ॥ १ ॥

जावार्थ–वली जे जीव लोके त्रण काले मोटी विभूतिथके वीतरागदेवनु पूजन करे छे छतां जिनेश्वर-देवनी आणानुं खन्डन करे छे अने वली मात्र उंचदृष्टिये ाडंबाड कहेवरावबामाज आनद माने छे, तेनु सर्व अनुष्ठान तुपखन्डनवत् निरर्थक छे, एटले जेम फोतरा ाखनारने कमोदनो लाज मलतो नथी, तेम तेने पण अनुष्ठाननो लाज मलतो नथी

ो जप संजम शीलविनाण, तसुफलपामे जो हुवे आण;
ाणविना पण ते न प्रमाण, आचारगे एह वखाण॥३४

यत –अणाणाए एगे सोवठ्ठाणा, आणाए एगे निरुवठ्ठाणा, एयंते माहोउ एय कुसलस्स दसण इत्यादि

जावार्थ–केटलाएक जिनाज्ञाथी विपरीत प्रवृत्तिमां

उद्यमी वर्ते छे केटलाएक जिनाज्ञानु फल प्रा
निरुद्यमी छे ए बन्ने वात, हे मुनि ! तारे म थाओ,
कुशल (वीरप्रभु) नु दर्शन छे माटे जे पुरुष
गुरुनी दृष्टिमा वर्ततो होय, गुरु प्रदर्शित मुक्ति स्वी
रतो होय, गुरुनु बहुमान करतो होय, गुरुपर
धरतो होय, गुरुकुलवास करतो होय, ते पुरुष कर्म
जीतीने तत्व जोइ शके छे, अने एवो महापुरुष के
मन लगार पण सर्वज्ञोपदेशथी बहार जतु न
इत्यादि–

आपमतिना लक्षण जाण, असूत्र लवतो न करे का
नवुं करे जूनु ओलवे, आपमति ते निश्चे हुवे ॥ ३५।
नवु जाणेवा जणी, निगत कहु काइ जे सुणी,
।जलि कदाग्रह टाल, सुधी जिननी आज्ञा पाल
जिनेश्वर थया केवली, तेथी वरस चौदमे वली,
...।लिपहेलो निन्हवथयो, वयमाणेकडे ... ।५
सोलम वरसे बीजो जोय, तिष्यगुप्त नामे ते होय,
छेल्ले जीव प्रदेशे जीव, ए कीधी स्थापना सदीव ॥
वीर वरतता थया ए बेव, मुगति गया पछे कहीशु
बारम वरसे पामी मुगत, गौतम गणधरनी ए जुगत
वीरे थंप सोहमस्वाम, वीर पछे गया शीवठाम,

हना चाल्श मुनिनापाट, जिणेदेखाडीसाचि वाट ॥४०
उसठ वर्षे जबु सिद्ध, वाउपणाउगे शील प्रसिद्ध,
ठाणु वर्षे वीरथी, स्वयजव थयो धर्मसारथी ॥४१॥
तिन्नुधो जिनप्रतिमादेख, शाशन दीपाव्यु सविशेष,
नकशिष्यने काजे कर्युं, श्री दशवैकालिक उद्धर्युं ॥ ४२
रथकी एकसो सित्तरे, नद्रबाहु गुरु गुणे अवतरे,
वसग्गहर स्तवन करेव, मारी निवारीठे तिणखेव ॥४३
श निर्युक्ति नवी जिणे करी, सूत्र अर्थ युगता सवरी,
र्षे चउदवर्षे वली जोय, त्रीजो निन्हव जगमाहोय ॥४४
प्यो अव्यक्तवाद विशेष, आसाढाचार्य सुर देख,
पन्नर वर्षे स्थुलिजद्र, शील प्रमाणे लहे यहुजद्र ॥४५
र्थे थकी पूरव जे चार, गया विछिन्न तेथी धार,
म वसें वासे अवधार, चोथो निन्हव थयो विचार ॥४६
प्यो शुन्यवाद तिणे जाण, समुछेदनु सुणी वखाण,
स वसें अठावीस थया, महावीरने मुगते गया ॥ ४७
म निन्हव थयो तेणे समे, बे किरिया तेहने मतिगमे,
थकी त्रणसें पात्रीश, वर्षे थयो कालिकसूरीश ॥ ४८
वेनयवत्त शिष्य परिहरी, गयो उज्जयनीपुर निसरी,
गोदनो जेणे कह्यो विचार, इन्द्र फेरव्योवसतीद्वार॥४९
प चारसें त्रेपन प्रमाण, बीजो कालिकसूरीश जाण,

थेन सरस्वती वाणी जिणे, गर्दनिल्ल उठेयो तेणे ॥५
चिहुंसय सीत्तेरे विक्रमराव, थयो उज्जयनी नयरी ग
सिद्धसेनगुरुश्रावककीयो, महाप्रभावकनोजशलीयो
वरस पचसय चउवालीस, निन्हव उठो जाण
जीव अजीव अने नोजीव, राशीत्रण तेणे कही सदीव
गुरु समजाव्यो पण नवि वल्यो, आपमते
वरस चोराशीने पाचर्से, वयरस्वामी सुरलोकें वसें ॥५
वीरथकी वरसे पांचर्से, चउराशी अधिके वली तिहें
निन्हव जाण थयो सातमो, गोष्टामाहील ते महातम
तेणे थाप्यो ए मत वली, जीव कर्मयोग जेम
अपरिमाण थाप्पा पच्चखाण, जावजीवनु दोषे जाण
वरसें छसें श्री वीरथकी, नव अधिके जाणो इवकि,
खमणा नाम दिगंबरथया, महसमल पायक
जिनकल्पीनु लेइ नाम, जिणे माड्यो मनि परिमाण,
नारीने उथापी मुगति, न करे केवलीने वली भुगति
बीजा बोल घणा फेरवा, मत कर्यो आपे मति लवी,
वरसा सगे जे हुआ मति, ते मांहि नवि समकित रति
समकित विणुचारित्र नहीय, आगम एहवि साख

यत —न्दिष्यचरित्त सम्मत विहूणा।

ास, जेम थिरत्वं समकितवास ॥७१

णवे, एक प्रकार सहु पुण हुवे;

पड्गाण, न्यायरीति पाले ते जाण ॥ ७२

तीर, सतवाहन समामे धीर;

ा गुणी, बहु देसे आज्ञा ते तणी ॥७३॥

ारी जोड़, बलमित्र भाणुमित्र नृप होइ;

ोटीखीड,कालिकसूरिश्रसंमजलकिद्ध॥७४

ति केहनी, राये रीस करी तेहनी;

दीध, सूरि विहार तिहांथीकीध ॥७५

े, राये सनमान्यो तेहखे;

ियमे हरख घणेरो धरे ॥७६॥

न पाखी इम जाखवे,

ागतिजात्र श्राणि सविचार ॥७७

ार, वीर तीरथे ते ए परिहार,

पुण लेतां तेणि पुर रही॥७८

प नां हुइ,

नोतिहालाग ॥७९

दिन पंचमितणो,

ह धरो ॥८०

प्रागतने मिथे

चंड थयो जेथे परिवारणी, मणिभेदे ते वीसे ग[illegible]
पण जे हुंता साधु अनेक, कुमशाला नामे तेरि[illegible]
ते सामाचारी आचार, भेदे नवि प्रीतीय लगार।
वीरपछी ए के मारगे, वरस आठसें 'बयाली लगे,
साधुजने आचारे रह्या, पछे केटलाएक शइथया
चैत्यवासनो ते आदरे, नवकडी पण नवि होना,
[illegible]

पच्चखाणुमाचोतास, जेम पिरहुवे समकितवास ॥७१
पन्नी नवसें प्राणवे, एक प्रकार सव पुण हुवे;
ाहुनराय पुरपइठाण, न्यायरीति पाले ते जाण ॥७२
ारीतपे पर तीर, सतवाइन संग्रामे धीर;
ो मोटो राजा गुणी, बहु देमे आज्ञा ते तणी ॥७३॥
े उज्जेणी नगरी जोइ, बलमित्र भाणुमित्र नृप होइ;
ानीसुनमेहनोहीसीस,कालिकसूरिसुसंमंजसकिर्तो॥७४
गी नवि अनुमति केहनी, रायें रीस करी तेहनी;
चार्यने दिसवट दीध, सूरि विहार तिहांथीकीध ॥७५
ा पुर पइठाण जेटले, रायें सनमान्यो तेटले;
ा साजले आदर करे, हियडे हरख घणेरो धरे ॥७६॥
ेहरने नप कारवे, आगम पाखी इम जाणवे,
ररानें पारणे आहार, जगतिजाव आणि सविचार ॥७७
जोजो मन एह विचार, वीर तीरथें छे ए परिहार,
दिन नवि लेवो सही, ते पुण लेतां तणि पुर रही॥७८
पण आव्यु ढुकडु, तो पडिव पहवु सांकडु,
ानदिनजोइए छठजाण,तहीपजूसणनोतिहालाग ॥७९
राजा कहे जगवन् सुणो, नहि पले दिन पंचमितणो,
ो पाठो एक दिन करो, एह वचन अम्हारु धरो ॥८०

छे २ मगध वगरनुं ३ श्री माहावीरस्वामीना नामनने विषे

विमासता नवि वेसे बंध, चोथतणी तो राखी सध,
प्रमाण कीध राय आदेश, कालिकसूरि चित्तनिवेश॥

यतः—आसाढे पुण्णिमाए ठिया डगलादि गेएहति, पद्योसवणकप्पच कहेंति, पचदि ततो सावण बहुल पंचमीए पद्योसवेंति, अ न्नाचे कारणेण पणगेसु वुड्ढे दसमीए पद्योसवे एत्र पणरसीए, एवपणगवुड्ढी ताव कद्यति-ज सवीसति मासोपुण्णो सोय सवीसति मासो ज यपसुद पचमीए पद्योसवेंति. अह आसाढ दसमीए वासाखित्ते पविठा, अहवा जत्थ साढमास कप्पोकत्त, त वासप्पाउग्ग अण्ण च णत्थि, ताहे तत्तेव पद्योसवेंति. पा गाढ अणुरप आढतं ताहे तहेव चो एगारसीठ आढतेच डगलादि त गेएह पद्योसवणाकप्प कहेंति, ताहे आसाढ पु मासु पद्योसवति, एस उस्सग्गो सेसकाल सव्वोए, अववातो अववातेवि सवीसति- मासातो परेण अतिक्कमेउ ण-वट्टति. सवी-

राते मासे पुणे जति वासखेत्त-ण-लम्भति, तो-रोस्क हेठावि-पज्जो-सवेयव, तं-पुण्णिमाए पचमीए एवमादि पव्वेसु पज्जोसवेयव्वं, णो-अप व्वेसु. सीसोपुच्छत्ति, इयाणिं कह चउत्थीए अपव्वे पज्जोसविज्जति? आयरिउ भणति, कारणिया चउत्थी अज्जकालगयारिएण पवत्तिया. कह भणतेकारण? कालगायरिउ विहरतो उज्जे-णिगतो, तत्थवासावासतरठिउ, तत्थ णगरीए बलमित्तोराया, तस्सकणिठोभाया, भाणुमित्तो जुवराया, तेसिं भगिणी भाणुसिरीणाम, तस्स-पुत्तो बलभाणुणाम, सोयपगतिभद्दविणीय-याए साहूपज्जुवासति आयरेहिं सें धम्मोकहि-तो, पडिबुद्धो, पव्वावितोय. तेहिय बलमित्तभा णुमित्तेहिं कालगज्जो पज्जोसविते णिव्विसतो कतो केति आयरिया भणति, जहा-बलमित्त भाणुमित्ता कालग आरियाण भागेणिज्जाभ-वति, माउलेत्तिकाउ महत आयरं करेंति अब्भु ठाणादिय, त च पुरोहियस्स अप्पत्तिय, भणति

य एस सुद्द पासंडो वेत्तावि तोहिं रणो
पुणोपुणो जल्लावेंतो आयरिएण णिप्पठ प्पा
णा वागरणो कतो, ताहे से पुरोहितो आयरि
स्सपडुंठो रायाणं अणुलोमेहिं विप्परिणामे
एतेरिसितो महाणुभावा, एते जेणपहेण गच्छ
तेणं, पंहेण जति रणागति एताणिवा अकम
तो असिवंभवति, ते ताहे णिग्गता एवमादि
कारणाण अणतमेण णिग्गता विहरता प
ठाण णगर तेणपठिता. पतिठाण ..म.
स्सप अयकालगेहिंसदिठ, जावाहं आ। ठ
ताव तुप्रेहि णो पद्योसवियव्व, तत्तप सपना
राया, सोपकालगद्य एत सोत्त णिग्गतो अ
मुहो, समण संघोप महयाविभूतीए पा
कालगयो पविठेहि य भणिय भद्दवय सु
मीए पद्योसविद्यति. समण सघेण पडिवन्न,
रणाभणियं, तद्दिवस ममलोगाणुवत्तीए
याणुजाण्याघोद्दे हिति, साहुचेतिते ण-पर्ज्ज
सेस्स तो छठीए पद्योसवणा कज्जत, आ

हिं नणिय ण वट्टति अतिक्कामेत्तं, ताहे रया
।णिय, तो अणागय चउत्थीए पज्जोसविज्जति,
मायरिएण नणियं, एवंनवउ, ताहे चउत्थीए
ज्जोसविय एव. (इति निशीथचूर्णौ)

नावार्थ –आषाढ मासनी पुनमना दिवसे वर्षा-
ळसुधि वापरवायोग्य चीजो (उपकरण) तथा नगल,
स विगेरे ग्रहण करी चोमासीपुनमें चोमासीपडिक्क-
णु कर्यावाद, चोमासीलायक आ क्षेत्र छे के केम? ते
चारमा कोइये पुछ्यु, तो ते साधु कहे के श्रावण वद
ंचम पछि बने ते खरु, तेम करता जणाय के क्षेत्रमा
ोग्यता नथी, एम विचारी पाच पांच दिवसनी वृद्धि
ासुधि करे के यावत् एकमास अने वीसदिवस एटले
ाडवा शुदि पचमीये पर्युषणा करे शिष्यशका (प्रश्न)
ोइ कहे छे के वीसदिवसे कल्प तथा पाच पाच दिव-
ानी वृद्धिवमे कल्पस्थापनरीति सघनी आज्ञाव्रमे वि-
द पामी ते केम? उत्तर –चूर्णिमातो विछेदनी वातज
णाती नथी, विछेद एटले फरी तेनी उत्पत्ति सनवे
हि ते, अने अद्यापि क्षेत्रादिकनी योग्यता तथाविध न
ेवाथी तेम बनवा सनव छे, ने चूर्णिकार पण एज विधि

सबीछे उता विछेद थे पम कहे छे, परूपे छे, ते समीक्षकोये विचार करवो जोइये, जे कोइ आ तिछोगालीनुं नाम दे छे पण तेने लगती हकिकत नथी, माटे मध्यस्थ (तटस्थ) पुरुषोये यथार्थ विचारी सत्य स्वीकारवुं. माटे आषाढपुनमे रहा मूल मार्ग छे, तथाविध योग्य क्षेत्र न मले तो

अपवादमां पण विहार करताकरता हिल महिनो (५० मो दिवस) उल्लंघाय नहि. क्षेत्र न मले तोपण छेवट भाद्रवा शुद पाचमे तो वृक्षहेठे पण पर्युषण करवुं शिष्य प्रश्न करे रहेवुं? उ० पूर्णातिथिये पूर्णातिथि पाचम तेमा प्रमाण छे? उ० जुवो! निशीथसूत्र मूलमां, पांचमनांज कराय "पज्जोसवणाए पज्जोसवेयव्व णो वेमु" एटले पर्वनांज पजुसण कराय. 'चोथ' ओ अपर्व तेमां पजुसण कराय नहि करो दोष? आणनंग विगेरे दोष आणभंग प्रायश्चित "चउगुरु पच्छित्त" त्यारे शिष्य पूछे जेनु प्रायश्चित लेवु जोइये तो श्यामाटे ते करवुं अने हमणा अपर्व जे चोथ कराय छे अने आर के पर्व तो पर्वना दिवसेज थाय. ते पर्व दिवस तो

ोज सिद्धांतमां कहेल छे ते मुकी अपर्वे चोथ
वाथी आणाविराधक चारगुरुप्रायश्चित्त तो चोथ
पज केम? गुरु कहे छे के जाइ! तहारी वात खरी
पण कारणथी सपकाय –बीजो उपाय न जडे तो
: कारणे करवु पडे तेवु शु कारण अने ते कारण
। प्रसंगे बन्यु ते कहो गुरु कहे छे कारणिया (एटले
कारणिक)जो होयतो कराय जेम आर्यकालिकमहा-
ते करी तेम ते आ प्रमाणे.–कालकआर्यमहाराज
हार करता उज्जेणीनगरी पधार्या, त्यां वर्षाकालमाटे
। (चोमासामाटे रह्या) ते नगरीने विषे बलमित्र
ा तेनो कनिष्ट भ्राता (नानोभाइ) युवराजपदनो
नार जानुमित्र हतो, तेनी बहेन जानुश्री नामे हती,
ोनो पुत्र बलजानुनामे हतो ते बलजानु स्वभावथी
प अने विनयवान होवाथी साधुनी सेवा पर्युपासना
तो, ते जीव योग्य जाणी आदरपूर्वक ते प्रत्ये धर्म
। अने प्रतिबोध पामवाथी दीक्षा ग्रहण करावी ते
य बलमित्रराजाने रीस चमवाथी जे कालकाचारज
ासामाटे रहेला तेहने देशवहार (देशनिकालो)
ो. एहवा कोइपण सबल कारणथी ते बलमित्रा-
ना राज्यमा चोमासी करी शकया नहि ने त्यांथी

विहार करी पइठाणनगर चाल्या. ते पइठाणनगरना पोताना सघाडाना जे साधु हता तेने पण संदेशो कहे वराव्यो जे हु आवु छुं त्यांसुधी तमे रहेवामाटे ना करशोनहि सदेशानु कारण एज के एकेक राजाना स थयी (वली तीसरु पेदाथवाना संजनथी) दरकनशो बीजा स्थानांतर जइ शकाय ते नगरनो राजा जे स वाहन तेणे सारु मान आप्यु, ने ते पइठाणनगरना धुये पण आवकारसाथे नगरमा प्रवेश कराव्यो, अ ज समयें कालकआर्ये कह्युं के भाद्रवा शुद पा श्रीपर्व छे, ने ते वात पइठाणनगरना साधुये कबूल ते प्रसंगे राजाये कह्यु के ते दिवस तो माहरे चनानो तेथी साधुचैत्यनु आराधन करी शकाशे माटे छठनो दिवस राखो आचार्ये कह्युं के पाचमनं पर्व उल्लघाय नहीं त्यारे राजाये कह्यु, चोथ करो कारणथी राजाना आग्रहवडे चोथकरी परंतु माटे करी नथी एम स्पष्टरीते चूर्णिकार कही अने जे कोइ लखे छे के चोथ आर्य आज्ञाथी करिये छिये, तो कालकसूरिये नगरमा करताज केम कह्यु के भाद्रवाशुद पाचमनां पजुसण साधुये पण तेवातमान्य केमकरी. आनाथतमा चूर्णि

स्पष्टरीते लखे छे के, चोथनी वाबतनो आदेश राजाए ःकराव्यो छे, पण कालकाचार्यमहाराजनो आदेश तो वूर्णिकारे पाचमनोज लख्यो छे चूर्णिकारे कार्तिकपुन-मनी चोमासी कर्याबाद एकमना दिवसे विहार करवा-नी आज्ञा आपेली छे आ उपरथी सार समजवानो के चूर्णिकार पोते चोथने अपर्व कहे छे, ने अपर्वमा पजु-सण कराय नहि, अने करे तो प्रायश्चित कह्यु छे माटे ...मीज श्रीपर्व कराय एम खुल्ली रीते निशीथसूत्र १, ...ीथचूर्णि २, कल्पनिर्युक्ति तथा समवायाग टीका कल्पचूर्णि ४, दशाश्रुतस्कध ५, तथा तेनी चूर्णि ६, था पचासक हरिभद्रसूरिकृत तेनी टीका ७ विगेरे-ा पर्वना दिवसे पजुसण पाचमनाज कह्या छे, वली ...ाथ कर्यापछी पाचम न थाय, एम जे कहे छे ते खोटु ...व कारण के जो फरी न कराती होय तो पचागीवा-ये ननाइ केम करी नहि? अने जे एक दिवस वधे ...ी कुयुक्ति करो वमम (भ्रम)मा नाखेछे, ते पुरुषे अक्षर ...चागोना बताडवा जोइए हवेथी चोथज करवी अने ...ाचम नज करवी, एवा अक्षर कोइ स्थले छेज नहि ...प्रने टीकाठ पण सर्वमान्य होय तेज सत्य जाणवे

सुत्त-जेभिख्खु पज्जोसवणाए ण पज्जोसवे

इत्यादि ॥ जेभिक्खु अपज्जोसवणाए पज्जोसवेति इत्यादि ॥ दोसुत्ताजुगव वच्चति। इमो सुत्तथ्थो पज्जोसवणा गाहा ॥ जेभिक्खुपज्जोसवणाकाले पत्ता पज्जोसवेति। अपज्जोसवणाएत्ति ... वा जो पज्जोसवेति। तस्सआणादियादोसा गुरु पच्छित्तं, एससमत्थो ॥ इति निशीथचूर्णौ

आ सूत्रनो सारांस ए छेके अपर्वमा पजुसण न अने जो करे तो प्रायश्चित्त, अने पर्वमा न करे तो श्चित, माटे आगल न थाय, तेम पाछल न थाय, पजुसणना दिवसे पजुसण थाय, एटले जाड्वा शुद्ध मना दिवसेज पजुसण करवा न करे तो चार गुरु श्चित आ आज्ञा तीर्थंकरदेवे तेमज आचार्यजगत पण आपेली छे

प्रश्न १—पजुसणना दिवसोमा ज्यारे सचासमक्ष श्री आर्यकालिकसूरि महाराजे पोतानाज मुनयो श्री कल्पसूत्र वाच्यो संभळाव्यु हतु त्यारे ते श्री कल्प सूत्रमा केटला व्याख्यान (वखाण) कर्यां हता अथवा तो ते व्याख्याननी मर्यादा चूर्णिकारे बतावी छे के केम?

उत्तर १—आ बाबत संबंधी चूर्णिकारे श्री कालिकाचार्यजीने उद्देशीने कशी पण हकीकत दर्शावी नथी.

प्रश्न २—आर्यकालिकसूरिमहाराज एकज थया छे के जुदा जुदा थया छे?

उत्तर २—ए नामवाळा आचार्य एकज नथी थया, परन्तु जुदा जुदा थया छे, ते ए के—एक कालिकाचार्य दत्तपुरोहितना मामा तरीके ओळखमा आवे छे एम योगशास्त्रनो बीजो प्रकाश साबिती आपे छे, अने ते कालिकाचार्यना भाणेज दत्तपुरोहिते तेज आचार्यने पूछ्यु के—'महाराजजी! यज्ञनु शुं फल मले छे?' आना उत्तरमां गुरुए कह्यु के—'यज्ञना फलमा नरक मले छे!' इत्यादि इत्यादि. वली पूर्वश्रुतसमृद्ध आर्यकालिकाचार्य के जे आर्यश्यामाचार्यना नामथी पण ओलखमा आवे छे अने तेमणेज श्री पन्नवणा उद्धरेल छे एम श्री पन्नवणानी टीकाज साबिती आपी रहेल छे।

वली आर्यकालिकाचार्य सूक्ष्मनिगोद संबधी व्याख्या प्रकाशक तरीके ओलखमा आवे छे एम श्री निर्युक्तिनी टीका तेमनो कथासहित साक्षी आपे छे!

वली कालिकाचार्यजी गर्दभीलराजाना उ
दक तरीके ओलखमा आवे छे, एम श्री निशी
चूर्णि बतावी रहेल छे।

वली बहुश्रुत कालिकाचार्य घणा
परिवारवाला छता पोताना शिष्यो अविनीत
वाने लीधे एक शय्यातरने जणावी पोते एकला
विहार करी बीजे स्थले पधार्या, ए वृत्तान्त
ओलख आपे छे अने एनी साक्षिती श्री उत्त
ध्ययन बृहद्वृत्ति आपी रहेल छे।

वली श्री कालिकाचार्य राजाना
लीधे सकारणीक चोथ करनार तरीके
छे अने ए निवेनी साक्षिती श्री निशीथचूर्णि
विद्यमान छे।

प्रश्न ३–केटलाक महाशयो जाहेर करे छे के–आ
तो श्री स्कन्दिलाचार्यजीए शरु करी छे अने
देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणजीए ते वाचनाने पुस्त
रुढ करेल छे, एम आत्मप्रबोध मथमा छे?

उत्तर ३–हा, ते वात तेमां छे।

प्रश्न ४–केटलाक कहे छे के–चोथना पजुसण
सभासमक्ष श्री कल्पसूत्र वाची शके पत्रीज

यादा छे जो वांचन न करे तो श्रीकल्पसूत्र सजानी अदर न वचाय ए बाबतनो खुलासो केवी रीतिनो छे ?

र ४—हे समीक्षक ! तमारा कहेवा प्रमाणे श्री कल्पसूत्रनी व्याख्याननी अदर अने अंतरवाचनानी अदर 'एगग्ग चित्ताजिणसासणमि, पभावणा पूय परायणा जे ॥ तिसत्तवार निसुणति कप्प, भवण्णव गोयम ते तरंति ॥१॥ एटले के श्री वीरप्रभुजी गौतमस्वामीप्रत्ये फरमावे छे के—'हे गौतम ! जे प्राणी, आ कल्पसूत्रने पूजी अने प्रभावनायुक्त एकाग्रचित्तनी सावधानी सहित आ जिनशासनने विषे विधिपूर्वक श्री गुरुमहाराजनी पासे एकवीश वखत सांभले छे तो ते प्राणी अवश्य आ ससारसमुद्र तरीने मोक्षने पामे' एम श्री जिनेश्वरे प्रथम गणधरदेवने कह्यु ए कथन तथा कल्पसूत्रनी पूर्णाहुती समयनो आलावो (के जे अर्थसहित आगल कहेवामा आवशे ते) तद्दन खडित थइ जाय माटे लक्षपूर्वक ए शंकानु समाधान श्रवण कर.—ज्यारे श्री कल्पसूत्र (श्री वीरप्रभु पछी ९८० वर्षे) पुस्त-

कारूढ कर्यो, ते पछीथी एवो ठराव कया
कर्यो छे के चोथ करे तेज कल्पसूत्र वांची
अने ते शिवाय वांचे तो विराधक थाय. ते
विचारवानु छे. मतलब के उपर बतावेल
बीनाने संकलाववानी साथेनी स्पष्टपणे
रहेल छे के श्री कल्पसूत्र एकवीसवार
कल्याण थाय (एम श्री जिनेश्वरेज
धरमुखे फरमावेलुं छे.)

प्रश्न ५–ज्यारे श्री भद्रबाहुस्वामीएज श्री
रच्यु छे त्यारे ते पहेला पजुसणपर्वनी अंदर
ल्पसूत्र रचायेल न होवाथी) शु
वतु हतु ?

उत्तर ५–देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीजीए श्री
श्वरोना चरित्र तेमज श्री वीरप्रभुना
त्र जे पोतानुज चरित्र जे प्रकाश कर्युं
श्री गोतमादि गणधरोए रचेल छे अने
परपरागमना आधारे श्रुतकेवली श्री
स्वामीजीए कल्पसूत्रनी रचना करेल छे,
गोतमस्वामीने उद्देशीनेज ते कल्पसूत्रनुं
रूप श्रीमुखे वर्णव्युं छे ए वाक्यनी

साक्षितीमा खुद श्री कल्पसूत्रना अंतिम आलावामाज पुरावो छे के —तेणं कालेणं तेणं समएणं समणेभगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलएचेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीण बहूणं सावयाण बहूणं सावियाण बहूणं देवाण बहूणं देवीण मज्झगए चेव एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पन्नवेइ एवं परूवेइ पज्जोसवणाकप्पो नाम अज्झयणं सअठ सहेउय सकारण ससुत्तं सअत्थं सउभय सवागरण भुज्जो भुज्जो उवदसेत्तिबेमि.' एटले के श्री भद्रबाहुस्वामी पोताना शिष्यमडळने कहे छे के–में जे आ कल्पसूत्रनी अदर त्रण अधिकार अर्थात् श्री जिनोना चरित्र २ थिविरावली अने ३ साधुसमाचारीरूप ग चना प्ररुपेल छे, ते में मारी मनकल्पनाथी कहेल नथी, परतु श्री तीर्थंकरदेवना उपदेशथी में अधिकार कहेल छे मतलब के–ते काल चोथाआराना अतने विषे, राजगृहीनगरीना गुणशील चैत्यने विषे वीरप्रभु समोसर्या ते समये घणा

मुनिओ, घणी साध्विओ, घणा श्रावको,
श्राविकाओ, घणा देवो अने घणी देवीओ,
चतुर्विधसंघनी सभा वच्चे जेवी रीते आ
अधिकारवालु पर्युषणाकल्प श्रीमुखथी
च्यु, तेवीज रीते हु (भद्रबाहुस्वामी)
शिष्यवर्ग अने चतुर्विधसंघ अगाडी कहु
तात्पर्य एज के श्री वीरप्रभुए कइ
कोइ एकांत खूणानो आश्रय लइ आ
वाची के कही नथी, परंतु चतुर्विधसंघ
इष्टिसननी सभामा बिराजमान थइ स्वयं
बडे त्रण अधिकार गौतमादि गणधरदेव
प्ररूपेल छे तथा जेम ते गौतम तथा सुधर्मा
मीए जेवीरीते ए त्रणे वाचनाओने अमलमां
तेवीज रीते हु (भद्रबाहुस्वामी) पण
परा क्रमवडे ते त्रण अधिकार न्यूनाधिक
विनाज कहु छु ते त्रण अधिकारवालु
पज्जोसवणा अध्ययन 'सअट्ठ' कहेता
परतु निरर्थक नहीं 'सहेउअ'–कहेता हेतु
छे, एटले के जेम गुरुराजने अथवा

[illegible]

तथा जेनी निश्राये रह्या होय तेउश्रीने पूछया विना के तेउश्रीना आदेश (हुकम–आज्ञा) विना कइपण काम करवु कल्पे नहीं केमके आचार्य महाराज ते सबधी तपास करनार अथवा तेमनु हित चाहनार होवाथी जेम आपणुं कल्याण थाय तेम करवाने समर्थ छे, माटेज तेउश्रीने पूछी, तेउश्रीनी आज्ञा मेळवी दरेक क्रिया–कार्य करवाथीज लाभ छे जो तेम करवामा आवे तो ते कार्य करनार दशविधिसाधु चक्रवाल समाचारीनो पण आराधक थाय छे 'सकारण'–कहेता साधुने सुखे सयमयात्रानी आराधना तथा समाधिना लायक तथाविध योग्य क्षेत्र न मले तो अपवादे आषाढी पुनम वीत्यानाद पण बीजाक्षेत्रनेमाटे तपास करता पाचपाच दिवसनी वृद्धि करे यावत् पर्वदिवस भाद्रवाशुदी पाचमें वस्ती न मले तो झाड नीचे रहेवु, पण एक डगलु आगल जवु नहीं ए विगेरे यथा कारण वताव्या छे, तेनु नाम सकारण, पुन 'ससुत्त सअत्थ सउ, भय'–कहेता सूत्रसहित, अर्थसहित, उभय सहित, 'सवागरण–कहेता पूछेला अथवा आप पूछेला पदार्थनी व्याख्या तेणे करी सहित,

[illegible]

थ्येत्यर्थ. ॥ एवम्भूतेषु धर्मदिवसेषु सद्गतिश-
यन प्रतिपूर्णोपि· पोषधोव्रताभिग्रह विशेषस्तं,
प्रतिपूर्णमाहारशरीरसत्कारब्रह्मचर्याव्यापाररूपं
पोषधमनुपालयन्सपूर्णं श्रावकधर्ममनुचरति.

भावार्थ –चउदश, आठम, पुनम एटले चोमासा-
नी त्रण पुनम (आषाढीपुनम, कार्तिकपुनम, फाल्गुण
नी पुनम) ए पर्व विगेरे पुण्यतिथीओने विषे,(इत्यादिक
धर्मना दिवसोने विषे) अतिशय मनोहर अने संपूर्ण
एवो जे पौषधव्रत अभिग्रह विशेष, तेने संपूर्णरीते एट-
ले आहारनो त्याग, अने शरीरसत्कारनो त्याग, ब्रह्म-
चर्यपालन, व्यापारत्यागरूप पौषधव्रतने पालन करतो
संपूर्ण श्रावकधर्मने आचरण करे छे एवी रीते चोमासी
त्रण पुनमनी सूत्रकृताग भगवती, उत्तराध्ययन आदि
सूत्रोनी वृत्तिमा बतावेली छे तेने मुकी अने चौदशने
दिवसे चोमासी करवानु कर्युं एवी रीते त्रण पर्वतिथी
चोमासीनी फेरवी

बरस नवसें चोराणु हुए, कालकसूरी कालगत हुए,
आगे चालचलावी राए, जेण ऋषिपचमी नवीलोपायाएश
एम फेरव्या पर्व शासता, अनाही दोसे लोपता,
पंचम पुनिम आर नकरे, तो किन ते जिन आज्ञाधरे।।५४

सहस वरसे पाम्या निर्वाण, सत्यमित्रथी पद्दुज जाण
सहस अठोतेर वरसें जाण, वीर पछी पोषालमंडाण,
वीरथकी वरसे चउदसे, चउसठ अधिके जाणो रसे,
वड हेठे वडगछ थापिया, चउरासी आचारज किया,
ते चउरासी गछ जाणवा, वडगछना मन आणवा॥
तेहनी सामाचारी एक, तेह मांहि नव जोड अनेक,
वम पीपलसीस्राती जोय, थोक ... आजा ... प
हारेजा जीराउल नाम, एत्रमादि चउरासी ठाम,
एक उपाध्याय अलगो हतो, काले गुरुपासें पूहतो॥
तेहे पण आचारज कीयो, पचासीमो गछ थापीयो,
तेथी केटले काले जोय, राजसभामा चर्चा होय
कस पात्र गाथी नीकली, खरतर नाम ठव्यो ...
विहुतरअधिकतेरससयसोल, कीधे ...
बोल एकसोने चोवीस, फेरे जिनव ...
वली अनेरा गछ उलराल, ...
धर्मघोष नाणा पत्रिवाल, ते ...
चित्रावाल ...
एहनी ...

वरस ...

रासीअधिके सोलसे, वरसे अचलगच्छमति वर्से॥११२॥
चोलना अंतर कर्या, ते पण घणे जणे आदर्या,
हरण अने मुहपत्ति, श्रावकने नवि थापे ठति॥११३॥
ाकने पडिक्कमण न कहे, ठ आवश्यक नवि सद्दहे,
ीआठमगणत्रीकरे, इम अतरअतिघणआचरे ॥११४

यत –वारह चउदोत्तरये । अचलिया तहय
आगमा जणिया ॥ इत्यादि.

जावार्थ –विक्रम संवत १२१४ वर्षे अचलगच्छ तथा
ागमिगच्छ थयो, इत्यादि

स सत्तरसें वीसे ठाम, आगमगच्छ धराव्यो नाम;
ा थुइ गणत्रीए पर्वे, पडिक्कमणे अंतर ठे सर्वे ॥११५॥
सहमाहि अतर घणो, अधिकमासे पजुसण तणो,
गविधि नादि फेर घणा, मन विमास जुई तेहतणा॥११६
ाकी अवधारो मने, वरस सत्तरसें पचावने,
ावालग्रकी नीकल्या, तपागच्छ नामे साजल्या॥११७॥

यत.–वारस पचासीए । ठडिय निय निय
रूण मझाय ॥ विज्जापुर नयरमिय। तवा मय
वजहाउ ॥ १ ॥

जावार्थ –विक्रम संवत् बारसें पचासीमा (१२८५)

पोतपोताना गुरुनी मर्यादा तोडी, एटले नेत्रपाल
ना जे आचार्यो तेनो मर्यादा तोडी– त्यारपछी
अलग थइ त्रिजापुर नगरने विषे देवनाक्षपक्षी म
प्रगट थयो

तिणे[1] गछ आचरणा विज्ञान, नहीं मालारोपण व
श्रावकने पण नहीं चरवलो, इत्यादिक अंतर सालव
तसु समाचारी नवि करे, सूत्रपथ पण ढालो धरे,
परपरा मुख थापे घणी, न जाणीये ते किणही तणी
सूत्रअर्थने कूडो देखी, जो कोइ पूछे सविशेषी,
परपरानु लेइ नाम, लोकतणु मन आणे ठाम ॥ १३
लोक न जाणे ते परे इसी, परपरा दाखे छे कीसी,
परपरा तो तेहज खरी, जे जिनवर गणधर आदरी॥
पण जे थापे आपापणी, तेहने माथे कोइ न धणी,
तेतो डाह्या माने केम, सूत्र विचारी जुओ एम ॥ १३

यत –जा जिणवरेहिं भणिया । गोयमम
हिं धीरपुरिसेंहिं ॥ सा–सच्चिय मेरा । पा
भवा पयत्तेण ॥ १ ॥

भावार्थ –जे मर्यादा जिनेश्वरोए कही अने

१ विधारानगरने विषे २ विशेषे करीने

दिक धीरपुरुषो (गणधरो) ए जाली, तेज मर्यादा
ची मानवी अने तेज मर्यादा प्रयत्ने करी आदर
त्रायेग्य (उपादेय) छे, अने तेथीज स्व परनुं क,
ाण थाय छे

त पंदर पचाशीए, क्रियातणी मति आणी हिये;
ा ऋषीसर किरीयावत, वैरागी देखीता सत ॥१२३॥
मत साचो कहे आपणो, बीजाने उथापे घणो,
ा पाट देखाडे जणी, परपरा थापे आपणी ॥ १२४ ॥
कहे साधुपणानी विगत, पाट नामनी थापे युगत;
ते जाण हुवे ते जोय, साधुपणाविण पाट नहोय॥१२५
लोपी पापी सहु कहे, तो का ठामी अलगा रहे,
ुं माथा शिरु पोपाल, ते छांडी कां पड्या जजाल॥१२६
कहे ते आचारे हीण, तो पाट नाम का थापो लीण,
गुरु तो निंदो काइ तास, सेवो तेहनो गुरुकुलवास॥१२७
तणा विण दाखे पाट, तेज म जाणो सूधी वाट,
ते सुधा गुरु जाणीया, तो लोपी कां अलगा थया।१२८
लोपता पातिक बहु, इम मुख लोक कहे छे सहु,
तो प्रत्यनीकपणुथाय, तो केमजिनमतआराधाय॥१२९
समाचारि जे रहे, तेने निगुरा निगुरा कहे,
उपर साजळो विचार, मनमाणो आमळो लगार ॥१३०

जे माने जिनवरना वयण, तेहना विवरे निर्मल
सचनीपरे ते सगुरा मद्दि, जगगुरनी जिणे पाणी

यत —आगमं आयरं तेणं । अत्ताणो
कणिणा ॥ जिननाहो गुरुधम्मो । सत्ते
मन्निया ॥ १ ॥

भावार्थ —[illegible]

[illegible]

कह्या करंडा चार, राय१ शेठ२ गणिका३ चर्मकार४,
सम आचारज कह्या, सुगुरुतणे वचने सद्दह्या॥१२७

पत –चत्तारि करंडगा पन्नत्ता तंजहा. राय
करडगे१, गाहावइकरडगे२, वेसाकरडगे३, सोवाग
करडगे४. एव मेव चत्तारि आयरिया पन्नता
तंजहा. राय करडग समाणे१, गाहावइ करडग
समाणे२, वेसा करडग समाणे३, सोवाग करडग
समाणे४ ॥

भावार्थ –हे भगवन्! करंडीया केटली जातना छे?
गोतम! चार प्रकारना ते आ प्रमाणे –प्रथम कर-
डीयो राजानो–ते बाहारथी रलियामणो अने अंदर पण
तेज उत्तम हीरा, माणक, पन्ना तथा सोनाना आभु-
षणथी रलियामणो होयछे बीजो करडीयो शेठीयानो–
बाहारथी देखावमां ठिक ठिक, पण अंदर सारा पदा-
र्थथी संपूर्ण भरेलो होय छे तीजो करडीयो वेश्यानो–
मा आभूषण बहारथी जपकादार अने अंदरथी पोल,
मडोम मालीं चलराटथी लोकोने फदमाज पाडरा
ार होय छे अने चोथो करडीयो चंडालनो–ते बहा-
रथी पण चामडानो अने अंदर) हाडका

हनो नाश अने सम्यक्त्वनो वास थाय छे, किं बहुना-
था महानिशीथसूत्रमा उपधानविधिनी हकीकत छे ते
या कया सूत्रनी छे, ते बीना सविस्तर त्या आपेली छे.
उपधानविधि करे छे तेमा करेमिभंते तथा वांदणा
था वंदितासूत्र तथा पच्चखाणसूत्रना उपधान मूकी
क्त नवकार १, इरियावही २, लोगस्स ३, शक्रस्तव
नमोत्थुण) ४, पुरक्खरवरदी ५, सिद्धाण बुद्धाण ६,
पाठमा आवश्यकना उपधान थाय छे, एम कोइ
ाने छे, परंतु तेम मनाय नहि, कारण के तेमा सामा-
क, (करेमिभंते) वांदणा, वंदितु, पच्चखाण, आ चार
आवश्यकना उपधानतप वह्याविना संपूर्ण आवश्यकना
उपधान मनाय नहि अने मात्र चैत्यवंदनविधिना
उपधान कह्यो तो मात्र चैत्यवंदननी विधिना उप-
ान गणाय, पण आवश्यकना गणाय नहि विगेरे
वेगेरे हकीकत योग्यगुरु गीतार्थ पासे समजवाथी
प्रतिनवज्ञान लाभ प्रगट थाय छे

चिहुंनो जाणी सुविचार, कहेवानो कीधो परिहार,
ऊ करडा नवि ठडाय, अशुद्धना किम पाट कहाय॥१३८
ो कहे ते जाणया गच्छपति, क्रियाहीण ने असयती,
न कहे सूधा धर्म वाट, तो तेना काइ जाखोपाट॥१३९
ो कहे सामाचारी एक, तेणे देखाड्या पाट विवेक,

हुगछना जसु परिचय हशे, ते सांजळी अतरजाणशे॥१५०
छोमाहे मके वाद, एक एकनो उतारे नाद,
क एकने खोटा उच्चरे, परदरशणी सखायत करे॥१५१॥
ो हुइ सामाचारी घणी, तो का थावे आप आपणी;
ण जोजो छोमी मन राग, वीतरागनो एकज माग॥१५२

यत –मूढाण एस छिइ । चुकति जिणुत्त-
वयण मग्गाड ॥ हारंति बोहिलाजं । आप-
हियं नेव जाणति ॥ १ ॥

भावार्थ.–मूढ एटले, मूर्ख माणसनी एवीज टेव
े के, जिनेश्वरे कहेल जे आगममार्ग तेथी चूकी
जाय छे अने बोधिबीजने हारे छे आत्महितने तो
जाणताज नथी, केमके तेओनी एवी स्थिति होय छे,
माटे मूढवृत्तिने त्याग करी जिनेश्वरनी आणाने आरा
धवी के जेथी कल्याण थाय

यत.–जकिंचि अणुठाण । जिणद आणाए
बहु फलं होइ ॥ जह वडतरुव बीय । वित्थार
लहइ वहुते ॥ १ ॥

भावार्थ.–जे कोइ अनुष्ठान (क्रिया) जिनेश्वरनी
आज्ञापूर्वक थाय, तो ते क्रिया बहु फळ आपनारी

: वहुमान करवावाला, एवा पुरुषरत्नोनो संग
ो जेथी आराधकपणो थाय परतु पुन्यना उदय-
ते जोग मळे.

पत —धन्नाण विहियेगो। विहिपस्का राहगा
पा धन्ना ॥ विहि वहुमाणा धन्ना । विहि पस्क
ादूसगा धन्ना ॥ १ ॥

नावार्थ —नाग्यवान् पुरुषोने विधिमार्ग, अने विधि
ॉ चालनारा पुरुष तेनो योग मळे छे, वीजाने ते योग
ावो घणो दुर्लन छे, अने मळेलो विधिमार्ग तेने
न करनार पुरुषो नाग्यवान् छे, केमके सेवन करवानी
ा थवी ते पण दुर्लन छे अने ते नाग्यवान्ने थाय छे,
र विधिमार्गने वहुमान आपनाराओ अने ते मार्ग-
दुषण नहि लगाडनाराओ पण नाग्यवान् गणाय
केमके केटलाएक पुरुषो घे अक्षर नणी आत्मज्ञानी-
मोल करी पोताने ते मार्गे चालवु कडु चरियाता
(लागे, तेथी खोटी भ्रमणामा सुलाइ जइ जे पोता-
. आत्मा अने वीजा नद्रक स्वनाववाला नव्यजी-
ने सरल मार्गथी भ्रष्ट करी नाखनारा जगत्मां घणा
ा छे अथवा जवानिनदी जीवो अने निषयानंदि
ो पण तेवीज रीते स्वपरने कूवामां देछे जे माणस

पुये मठपतिपणु करी मुकामनी ममता
गगी थइ बीजाने बोध करे के अमार
पोते नित्य कजीया करे, अहंकार मम-
ाव होय, अने गुरुकुलवासथी भ्रष्ट थइ
धी कषायनुं शरण ले छे, माटे सविज्ञ पुरु-
ामेधावी१, श्रुतमेधावी२, मर्यादामेधावी३
पोतानु कल्याण थाय वली आ स्थले
ानु छे के अढार. पापस्थाननो त्याग करी
जोयाविना, लाजल्याविना करवी ते अन्या-
ृडो कलक) आपवा जेटलु थाय छे, अने
ाहि पण ते माणसने वगर हथियारे खुन
लु पाप वहोरीलेवा जेवु थाय छे, माटे तेथी
अने आचारसमाधि१, श्रुतसमाधि२, तप
विनयसमाधिनु४, अवश्य ज्ञान मेलववानी
वली जपक्रिया, गरलक्रिया तेनाथी दूर
निशीथसूत्रना तप करवा, योग वहेवा,
सुविहत पासे तेनो अर्थ जो जा-
तो सत्यज्ञानसूर्य तमारा हृदया-
. दूर थशे, माटे
ाधना करी जणयानी,

पचांगी मानता पण नथी, त्या आपणा नेत्र तेमानजा आपवु, बीजाना वेरामो न आपवु, त्या आपणा गुरु वांदवा, बीजानो ढींगला ढींगलीसमान तथा होईने राजा तथा धूलीपर्वसमान जाणवा. पण "पांचकी तजवी नहीं सूजे आग मूतरवु, ठेरमु कहत तेरे सीरपे बस है" ए न्याय याद तो करो। सकल पचांगी आने मार्ग ये ठीये। "शुण राम राम" माफक पोली बोल पदेकारी वरमावया, बली साधु सविशपद धर ठता क्षेत्र, पुर, पाटण तथा देश तथा उपाश्रय, धर्मशाळा विगेरेमा ममता पोते करे अने श्रावक पासे करावे आपणी जग्यामां कोइ त्यागी महत पुरुष होय तो वासो वसवा देवो नहीं, परतु साधु थता विचार करवो जोइयेके पोताना घरबार कुटुंब त्यागकरी वळी मुसाफर ममताकरवी ते करवाथी सर्वपरिग्रहत्यागनामना पांचमा महाव्रतनो जगयाय नही अतिशयहस्यपरिचय ते नित्य (मर्यादा) थी उपरान वरते तो प्रथम पहोर त ठेल्ला प्रहरमा स्वाध्याय पण बनी शके नहीं, स्वेछाचारी गुरुद्रोही थइ, आणा जग करी पोते इछाए साधु साध्वी एकाकी विहार करे ते पण वृद्धिनु कारण एक घर छोडी हजारो घरनी फरवी ते साधुनो आचार नथी, माटे वावा

ठनी पेठे साधुये मठपतिपणु करी मुकामनी ममता
रवी नहीं त्यागी थइ बीजानें बोध करे के असार
ासार ठे अने पोते नित्य कजीया करे, अहंकार मम-
ारथी गरकाव होय, अने गुरुकुलवासथी भ्रष्ट थइ
ा अनंतानुबंधी कषायनुं शरण ले ठे, माटे संविज्ञ पुरु-
ोये ग्रहणमेधावी१, श्रुतमेधावी२, मर्यादामेधावी३
ावु, जेथी पोतानु कल्याण थाय वली आ स्थले
ाद राखवानु ठे के अढार पापस्थाननो त्याग करी
ाइ वात जोयाविना, सांजल्याविना करवी ते अन्या॰
ान (कुडो कलक) आपवा जेटलु थाय ठे, अने
टलुज नहि पण ते माणसने वगर हथियारे खुन
रवा जेटलु पाप वहोरीलेवा जेवु थाय ठे, माटे तेथी
टकवु, अने आचारसमाधि१, श्रुतसमाधि२, तप
माधि३, विनयसमाधिनुं४, अवश्य ज्ञान मेळववानी
रुर ठे वली विषक्रिया, गरलक्रिया तेनाथी दूर
हेवु, अने महानिशीथसूत्रना तप करवा, जोग वहेवा,
ईने ते सूत्र सुगुरु सुविहृत पासे तेनो अर्थ जो जा-
शो या सांजलशो तो सत्यज्ञानसूर्य तमारा हृदया-
ळमा उदय थवाथी मिथ्यात्व अंधकार दूर थशे, माटे
ास महानिशीथसूत्रनी आराधना करी जयवन्ती

स्वरूपनी समजण लेवानी जरुर छे, तोज सम्यग् ज्ञान प्राप्त थशे अने पोताना आत्मानो उद्धार करशो. माटे गुणवान गुरुनी सेवा कल्याणकारी छे. तेथीज मनोवांछित सिद्धि थाय छे.

[illegible] हितार्थे अेह, गुरु जाणी [illegible]
[illegible], जेहनो ते [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

केकग्रंथे जोइ विचार, तेहपण कुगुरु सग परिहार,
त्र पाडवना समास, साख एहनी छे तिण ठाम॥१६३

यत –गुरोरप्यवलिप्तस्य । कार्याकार्यम-
ानत ॥ उत्पथप्रतिपन्नस्य । परित्यागो वि-
ीयते ॥ १ ॥ त्यजेद्धर्मं दयाहीन । विद्याहीन
ुरु त्यजेत् ॥ त्यजेत्क्रोधमुखीं भार्यां ।
न स्नेहान् बान्धवान् त्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थ –जे गुरु मदथी वाकटा बनेला होय अने
ार्य अकार्यनु जेने ज्ञान नथी, वळी उन्मार्ग (अवळे
ते) पोते चाले अने बीजाने पण केवळीए परुपेला
र्गथी भ्रष्ट करावे एहवा कुगुरुनो सग त्याग करवो,
रण के दयारहित जे धर्म होय तेनो त्याग करवो
ने विद्याहीन (अविद्यावान्) गुरुनो त्याग करवो,
ोधमुखी भार्याने त्याग करवी, अने स्नेह वगरना
ुओने त्याग करवा

नशासन पण जोइ विमास, कुगुरुतणे नवि रहियेपास,
ागतज्यो शिष्यपचसे, ज्ञाताधर्म कथा जुओ रसे॥१६४
ासाधेपणतज्योजमालि, जिणे पाड्यो घणलोक जमालि,
ारमर्दक नामे सूरि, सुसाधु शिष्ये कीधो दूरि ॥१६५

(1)

घर विषधर सेवीजे साप, कुगुरु सेवता छे बहु पाप,
जोजो ग्रंथ विचारी करी, राग द्वेषनी मति परिहरी॥३३॥

यतः—सप्पे दीठे नासइ । लोउ नहु काइ किंपि अक्केइ ॥ जो चयइ कुगुरु सप्पं । हा!! मूढा जणाति त दुठ ॥ १ ॥ सप्पो इक्क मरणं । कुगुरु अणताइ देइ मरणाइ ॥ तो वलि गहियो । मा कुगुरु सेवण भद्द !॥ २ ॥

भावार्थ—सर्पना भयथी माणस ज्यारे दूर नासी जाय छे त्यारे लोक पण कहे छे के तें सारु कर्युं, पण प्राणी कुगुरुरूप सापने त्याग करे तो मूढ प्राणीओ बोले छे के तें भुडुं कर्युं, पण ते जाणता नथी के मात्र एक मरण करे अने कुगुरुतो अनता मरण

पाले क्रिया न साचू कहे, ते पण गुरु पदवी नवि लहे,
क्रियाविसासिमराचित किमेमणिधरसपर्यानदिइजिम॥

यतः—बहु गुण विज्जा निलउ । उसुत्त भासि तहावि मुत्तवो ॥ जहवर मणिवर जुत्तो । विग्घकरो विष हरो लोए ॥ १ ॥

भावार्थ—अनेक विद्यानो भंडार होय, पण

सूत्र परूपनार होय तो मणिजूषित पट्टनो पण साप म विप्ररूप गणाय, तेम ते गुरु पण मोक्षमारगमां विघ्न रक जाणी छांडवो

म जिम बहुश्रुत बहु परिवार, घणा लोक वदे अविचार' पणनकहे आगमसार, शासननो ते शत्रु विचार ॥१६७

यत –जह जह बहुस्सुअ समअप । सीसगण पपरिवुडोअ ॥ अविसार सोय पवयणे । तह ह सिद्धत पडिणीअ ॥ १ ॥

भावार्थ –जेम जेम बहुश्रुत–घणा शास्त्र जेणे सा- ळ्या छे एवो, अथवा जेणे घणां श्रुतनो अभ्यास र्यो छे एवो, तथा घणा अज्ञानी लोकोने समत ष्ट) एवो, वळी शिष्यना समूहवडे (घणा साधुना रेवारे) परवरेलो छे, छता पण जो ते साधुना हृदयमा शास्त्र रहस्यनो प्रवेश न थवाथी कोरोने कोरो रह्योतो म "चक्रवर्तिनी खीरमा चाटवो (ताविंतो) पड्यो तोपण खीरनो स्वाद न पामे' तेम वळी जेम "न मा कठोर पथरो भेदाय नहि, पाणी अदर पेसी नहि" तेम शास्त्र वाचे पण तेनो रहस्य पामी े नहि, (एटले अनुभव रहित) ते सिद्धातनो [जाणवो मनलब के तत्वज्ञाननो अनुभवी थोडु

पाल्यो होय पण ज्ञानथी थतो लाभ तेणे मेळव्यो । मोक्षमार्गनो आराधक जाणवो अने बहुश्रुत ज्ञानी ज्ञाननो लाभ न मेळव्यो (न पाम्यो) ते विराधक जाणवो

शरणागतनु शिर जे छुणे, ते लेवाये पातक घणे,
तिम आचारज पण जाणवो, उसूत्रनापी मन आणवो॥

यतः—जह सरणमुवगयाणं । जीवाण निकितए सिरे जोउ ॥ एवं आयरिउ विहु उस्सुत पन्नवितोअ ॥ १ ॥

भावार्थ —जयजीत प्राणी शरणागत थयो, शरणे न राखता तेज माणसनु जेम, गळु कापे, देशना देनार उत्सूत्र (सूत्र विरुद्ध) परूपणा आचार्य पण तारवाने बदले बूडाडनार अने अनंत भ्रमणमां नाखनार जाणवो कोइपण माणस तथी गुनेहगार थवाथी, या सबल माणसथी बचाव सारु उत्तम माणसना शरणे जाय छे, ने तेज माणस पोतानु भान भूली ते शरणागतनुज माथु नाखे तो " जेनी वाड तेनी धाड " ए न्याय थाय, कोइक प्राणी संसारदावानलथी बचवा सारु आचार्यनु नाम सांभळी तेनी पासे जइने अरज करे हे भगवन्! संसारदावानलथी मने शीतल करो

सन्मार्ग बताडो, त्यारे आचार्ये ते भोळाजीवने सन्मार्गना बदले उन्मार्ग बताडी, पोताना वाडामा दाखल करवामाटे लालचमा नाखी देवाधिदेवनो रस्तो न बतावता सूत्रविरुद्ध परूपणा करे के हु कहु छु तेम कर एम बतावी सम्यक्त्वना बदले मिथ्यात्वमा नाखी धर्मरूप मस्तक छेदी नाखे तेवा आचार्यनो संग कदी करवो नहि

तो गुरुनामे शु राचीए, साधु सुगुरुना गुण याचीए,
गुरुनोप्याश्री बीहे जेह, साचा साधु न मुके तेह ॥१३०॥
...म साचे क्रिया, साचे सद्गुरु साचे दया,
... जगमते सूरि ॥१३१॥
... एटला लगी,
...जाणवा॥१३२
...तो॥१३३

सन्मार्ग बताडो, त्यारे आचार्य ते भोळाजीवने सन्मार्गना बदले उन्मार्ग बताडी, पोताना वाडामा दाखल करवामाटे लालचमा नाखी देवाधिदेवनो रस्तो न बतावता सूत्रविरुद्ध परूपणा करे के हु कहु तु तेम कर ' एम बतावी सम्यक्त्वना बदले मिथ्यात्वमा नाखी धर्मरूप मस्तक छेदी नाखे तेवा आचार्यनो संग कदी करवो नहि.

ो गुरुनामे गु राचीए, साधु सुगुरुना गुण वाचीए,
ुरुनोप्यासी बीहे जेह, साचा साधु न मुके तेह ॥१३०॥
ाचे समकित साचे क्रिया, साचे सद्गुरु साचे दया,
ाधु कहे ते साचा सूरि, ते वदु उगमते सूरि ॥१३१॥
ूना नवा तणी तानगी, ए देखाडी पटखा लगी,
ाळी जे दीसे मत नवनवा, ते पण सूत्रविरुद्धजाणवा॥१३२
गछाचार तणी चौपाइ, गाथा एकसो त्रिहुतेर थइ,
र सांजर्दी सोधर्मगछनजो, आपमतिनीसगति तजो॥१३३
इम जोइने जिनवर आण, सूत्र अर्थ सनि करो प्रमाण;
यजितिवेशमनतो परिहरो,नह्म कहेजिमशिवसुन्दरो॥१३४

॥ इति श्री शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्री ब्रह्मर्षि
कृत श्री सधर्मगच्छपरीक्षा समाप्त

॥ (श्रोता परीक्षानी) सज्झाय ॥

(राग कालगडो)

वरसे पुष्करावर्त्त सुमेहा । तन पृथ्वी जेदाये नीर । पण एक मगसेलीओ न जेदाय । अति न्हानो ने कठिन शरीर ॥ १॥ तिम गुरुवचने किमें न जेदाय । जे प्राणी होय जारी कर्म। कत (शुक) शोष जो अति घणो कीजे । तोय न पामे सूधो धर्म ॥ तिम० ॥ २ ॥ बावना चंदन गध तजीने । कसमल ऊपर माखी जाय। परिमल कमलतणो छंडीने । मेडको नित कादव खाय ॥ तिम० ॥ ३ ॥ काले कावल गुलियलि कापड। धोलतणो नवि वेसे रंग। वायस वान न थाये धोलो । जो नित नोहे यमुना गग ॥ तिम० ॥ ४ ॥ चिगटे कुंजे जल नवि जेदे। न रहे काचे जाजन नीर। रवि वेरी घूवड हुए अधो। पान न लहे जसम वरीर ॥ तिम० ॥ ॥ ५ ॥ मूंग कांगडू कण माहे जेहवो । पाणी अगनि न छीपे अस। जव फेलव्या न होवे तंडुल। धग सींगव्या न थाये हुस ॥ तिम० ॥ ६ ॥ मृगमद अगर कपूरे वास्यो। लसण न पामे रुडो गध। सूरज शशिहर हीरा जोने। किमही नवि देखे जात्यंध ॥ तिम० ॥ ७ ॥ जायो चढ चोरने न गमे। मेहे जवासो सूके

जाय। खीर खाण घृत मीठो जोजन। पेट कूतराने न समाय॥ तिम०॥ ८॥ मीठी डाख न वायस चाखे। श्वानपुछनी न समी थाय। घ्यानातु वन (करहो), ऊट चरे नही। अन्याइने न गमे न्याय॥ तिम०॥ ए॥ खाय न सनिपातियो साकर। पापी ने धरमी न सुहाय। रुचे नही चपो मधुकरने। घुण नित सूको खाकण खाय॥ तिम०॥१०॥ गाम समीप नदी मूकीने। रासन राखें खरने अंग। कुलवती कामिनी तजीने। नीच करे पर रमणी सग॥ तिम०॥११॥ नल फीटीने सेलडी न थाये। इक्षु तणे जो वाधे सग। दूध गुलें जो लींब सींचाये। तोहे मीठो नवि थाय प्रसग॥ तिम०॥ १२॥ खीर सर्पमुख न हुवे अमृत। काच कमायो रतन न होय। खारो न टले समुद्रनो नदीयें। मोटे वण फन नीरसज होय॥ तिम०॥ १३॥ माथे मणि नितु वहे भुजगम। तोहे ते नवि निरविष हुत। रामतणी सेवा करे हनुमत। लगोटी अधिको न लहत॥ तिम०॥१४॥

(ढाल–श्री सद्गुरुवचन करे शु तेहने ए राग)

इम लौकिक सबध विचारी। लोकोत्तरनी सुणजो वात। चित्रे ब्रह्मदत्त बहु समजाव्यो। विरतिनणी नवि थाणी घात॥ श्री सद्गुरुवचन करे शु तेहने॥१५॥ महाव

शिष्य जमाली । तिहनें नवि लागो उपदेश । कालिग-सूरीयो कपिलादासी । गोसालो पामशे कलेस ॥ श्री०॥ ॥ १६ ॥ विष्णुकुमारना वचन सुर्णाने । नमुचि न मानी कांई सीख । मारणहार उदाई नृपनो । बार वरस लगि पाली दीख ॥ श्री० ॥ १७॥ शिष्य पाचसें केरो नायक । अंगारमर्दक नामें सूरि । श्रावक परख्यो अजव्य दर्यां-विणुं । निर्गुण जाणी कीधो दूरी ॥ श्री० ॥१८॥ संवेगी सावद्याचारज । सूत्र विरुद्ध तिणें कह्यो विचार । नागिल बंधव बहु समजाव्यो । सुमतिए कुगुरु न तज्या लगार ॥ श्री० ॥ १९ ॥ शीलसनाह रिषिये प्रतिबोधी । रूपीये नवि काढ्यो साल । वरस पचास तरे तप लक्ष्-मणा । तसु फल न थयो एक बाल ॥ श्री० ॥२०॥ ईसरने मन धर्म न चेयो । रत्ना महासतीने थयो रोग । फासू जलथी काया निणसे । इम जाणें घाल्या बहु लोग ॥ श्री० ॥ २१ ॥ पालककुमार नेमि जइ वंद्या । कंडरीक पाल्यो चारित्र । कृष्ण साथें वीरे जइ वंद्या । फलें फेर अति थयो विचित्र ॥ श्री० ॥ २२ ॥ सगनि पहने दुति रूडी । पुण नवि धीम्यो सार विचार । कर्म निकाचित जेहने पोते । ते प्रतिबोध न लहे लगार ॥ श्री० ॥२३॥ दृष्टिरागें नर जे हुए रातो । ते हुइ दोषी अति घण-

घोर। मूढ वचन परमारथ न लहे। विग्रह पडिया वदे कठोर ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए चिह्नने धर्म कहेवा बेसे। ते नवि जाणे आगम रीत। कूकरवदनें कपूरज घाले।' जे हठपणने न धरे चित्त ॥ श्री० ॥ २५ ॥ लोह वणिग, जिम करे कदाग्रह। सूत्र न साचो प्रीछे जेह। लोक प्रवाहे मूरु मेलहाने। साचो धर्म न जाणे तेह ॥ श्री० ॥ २६ ॥ जारी कर्म घणाने ए परें। हलुकर्मि प्रीछे तत-काल।'सनतकुमार चिलातीनदन। थावच्चासुत गय-सुकुमाल ॥ श्री० ॥ २७ ॥ पर्षद पुरुष जोइने कहिवो। धर्म कह्यो इम आचारंग। नदीसूत्रें सीप सजारी। मह्म कहे ज्यो ज्यो मनरंग ॥ श्री० ॥ २८ ॥

॥ अथ श्री गीतार्थावबोध-कुलकम् ॥

॥ देशी-सलोकानी ॥

॥ नेमनी केरो कहुं सलोको, एक चित्तेथी सांभलजो लोको ॥
अथवा चउपाइ छंद

वीर जीणंदह दुप्पसहंतर, निरतो वरते धर्म निरंतर।
तेहतणो विछेद पयंपे, आगम वयणथकी नवि कंपे ॥१॥
पंचमकाले पडया प्रवाहे, केइ कुगुरु जण जणने वाहे।
वाध्या क्रोध लोभकल्लोल, थविधिनेविधि कीधो हलोल॥२

आरंभपमुह परिग्गह ममता, मडी बहु दीसे गुण गमता।
गुरुविणुजरत्नगुरुजिमरहिये, अविधिमूलपदेशोएकहीये.
गिरिनविशालेमूधो धर्म, कारतनमिलियाजिमनर्म।
पारख जिम परतीने लीजे, धर्मतणो पण ठेदन कीजे॥४
किणे कुपगे काकमल लागो, पीतनने मूले काइ मागो।
जइप जेम तट जस विष ठंडे, जेंता डोहे डडस म मडे॥५
जे अजाण तसु सग न कीजे, गड्डरि पुठे केम तरीजे।
अंध अजाणपथ्रकिमदाखे, तिमसुगुरुविण धर्मकुणजाखे
अचूक यन्द तूने सधार, लोकमांहि पण इसो विचार।
रोग अजाणये उंसध करे, रूविइत्याकत ते नर लहे॥७
इसो जाणि परखी ओजाण, धर्मतणो जिमलहो प्रमा
शब्द नेद जाणे जे अर्थ, ते गीतारथपदे समर्थ ॥०॥
आगम बोल्यो शब्दविचार, दसम अगे जाणो स
तसु विशेष अनुयोगदुवार, जाणीलेजोआगम
नाम पमुहपद जाणे पनर, कूम सत्यपद लहे प-
कूमो अर्थ कहे जाणतो, अजिनिरेसि जव जमे
एद नेदनिरतानविजाणे, ते अजाण किम
दृष्टिराग उपजे प्रतीत, धर्मतणी नजना तहु
नेमीविणु परधन व्यवहार, परप्रतीति तिम
आपणजाणपणो इणकारण, चरणमूल समरथ

क्रियावंत पाईंगीतारथ, अधिको जनिपणतारणसमरथ।
वीर प्रकास्यो पचम अगे, जोइलेज्यो ठे चउजगे ॥१३॥
कंर क्रिया मत्य नवि जाणे, आपण ठदे सूत्र वखाणे ।
देसथकी आराधक कहिये, तासु सगेधर्मजजना लहिये
जाणे सत्य कहे जे साचो, क्रियातणी आचरणा काचो ।
तेहने देसविराधक जाणो, तासुसग गुणहाणि म जाणो १५
एक अजाण क्रियानहुपाले, साधुवेस जिनधर्म विटाले।
सोइ थान घूडनो घोले, सर्वविराधक मुनिने तोले॥१६॥
सवेगी गीतारथ साचो, तसुदसण गुरु जाणी राचो ।
आपण तरे अनेराने तारे, सर्वाराधक वीर विचारे ॥१७॥
ज्ञानहीन किरिया आडंबर, मत्ती मूढ मुसें सेयनर ।
अरे मूढ ते किरिया न होय, विणु मूले नरूडाल मजोय
नाणाभ्यण न सम्योगयोग, जाइसरण सुयनाणविहीणा।
इमअदत्त श्रुतवत जे लीजे, इणि चोरी कांइ काज नसीजे
पुस्तक पोथी घरें विणासे, आपण ठदे मन उल्लासे ।
एटीपाता गुरुना अधिकारि,कह्यो कवणपरि ए विचारि॥२०
ऐतुयुद्धि नृपने मादीयो, चयसजाणितेणे मन दृढ कीधो
निज रात्र जाओ स्वराय, श्रमणोपासक बोल्यो राय ॥
आगम नवरों जैनी धरमे, वीर पटी अमीया मनइर्षे ।
ज्ञानि दिखाडे नेज परदे, अपवादें उत्सर्ग न पट्टे ॥२२
आगमजणिवाना परिकेरी, पुस्तकविणु ज्ञपणां किम गेही

मुनिसमीपे एहवासेवसता, श्रवधे नहु जाएयाश्रुतजणता॥
उद्देशादिक क्रिया विशेष, वायण सयणतर सविसेष।
कालग्रहण पूजक ए कीजे, इम श्रागम श्रनुजोग लईजे॥
जो इणेविधि श्रागम जणिये, तो निश्चे मुनि जणतागणिये।
श्रुत श्राराधी पहोंचे पार, चोथे अंगे ते श्रुत अधिकार१५
जिहने जे श्राव्यो अधिकार, ते जजतो नहु लहे धिक्कार।
इम कही उपरांग चाले, सात जेम चिरकाल ते सांहे
दीपकी याधी कांड तुम्हे नाणो, ज्यानेतक त्या राय म उ
साधुसमीपे सजजि श्रुत श्रर्थ, श्रावक बोल्या तरण सं
श्रसुण्यो श्रदीठो श्रजाण्यो, जणजणसाले श्रर्थवखाण्यं
ते नर हुस्ये बहुल ससारी, पचमश्रंगे लेहु विचारी॥
जे श्रागम जयवता सपइ, तासु जाव सजजि मन कप
श्रविधिजणी कूडो जेजाखे, बिहुमाहि जव एक नराखे।
जे निय ठद पडे नहु पाले, वसे सुगुरु गीतारथ पासे।
पंचमहव्रयनिरता पाले, ज्ञानतणी श्राशातन टाले॥१६
सुगुरु सग सजजि सवेगी, विधिशुं श्रुत जणीजे श्रनुयो
गीतारथ पदवी श्राराधे, निश्चे ते परमपद साधे॥२१॥

कलश–इम श्रागमवाणी जविया जाणी, सवेगी गीतरथ पद। सूत्रारथ साचो सजजि राचो, जिणधर्म जेम लहो सुद॥ २२॥

॥ इति गीतार्थ पदावबोध कुलकम्॥

॥ अथ श्रीविजयदेवसूरिकृत सद्याय ॥

॥ धारती सब दूरे करीए ॥ ए देशी ॥

श्री जिनेश्वर पय नमी, कहिस्युं सूत्राचार, एक मने जे करतां सही, थाइ लहिसें हो भवसागर पार ॥ १ ॥ सूत्र तहत्त करी सदहो ॥ मन राखो हो गाडरीए प्रवाह; कुमति कदाग्रह छडजो, आलोचो हो निज हीयडामांहि ॥ सूत्र० ॥ २ ॥ सूत्र विरुद्ध जे दाखियो, पासथ्थानी रीति। ते सांभलीने टालजो, जिनशासने हो जे जेहने प्रीति ॥ सूत्र० ॥ ३ ॥ जीतवनी राजोतती, सका महाव्रतधार, साधु न वंदे तेहने, आराधे हो कोइ अणगार ॥ सूत्र० ॥ ४ ॥ पडिकमणामांहि किम करे, साधु देवी आधार, डाया थाइ टोनो तुमे, क्यो पडिवो हो गणधार ॥ सूत्र० ॥५॥ यक्ष देवीनी थुइ कही, भरदप मागे जोए, मिथ्यें उपाधर्मी जे रहे, जिनशासनी हो साधु न होए ॥ सूत्र० ॥ ६ ॥ देवीनो काउसग्ग करे, मन बिमे नवकार, मन्त्र तिमही भपाते, जीमाडे हो ए वरण आचार ॥ सूत्र० ॥ ७ ॥ कइ लोकालि काउसग्ग, भले जिनवर भाव, सूत्रमे गुणदाविनी, ...दि अविधाहि तेव देवी गुणाद ॥ सूत्र० ॥ ८ ॥ पडिकमणो माहीए, जे कोइ करो मिथ्यात, जो तिहां

॥ सूत्र० ॥ १८ ॥ खोटे मूलमे मठपती, लोक मुसे निसदीस, ते हित कारण में कह्यो, मत आणो हो कोइ मनमें रीस ॥ सूत्र० ॥ १९ ॥ गछाचार अनेक छे, ते जाणे सहु कोइ, श्री जिन सूत्र आराधज्यो, जीम तुमने हो अविचल सुख होइ ॥ सूत्र० ॥२०॥ श्री विजय देवसूरी इम कहे, पालो आगम प्रमाण, सूत्र विरुद्ध छांडज्यो, जीम पामो हो शिवपुर ठाण ॥ सूत्र० ॥ २१ ॥

इति सातिशय शक्तिधारक श्रीमद्विजय-
देवसूरीणा विरचिता स्वाध्यायैक-
विंशतिका ॥ श्रेयसे भवतु ॥

॥ दृष्टिराग कदाग्रह परिहार हितशिक्षा ॥

॥ राग प्रभाती ॥

दृष्टिरागे नवि लागीये, वली जागीये चित्ते ॥
मार्गीए शीख ज्ञानीतणी, एह जागीये नित्ते ॥ १ ॥
जे छता दोष देखे नहि, जिहां जिहां अति रागी ॥
दोष अछता पण दाखवे, जिहांथी रुचि भागी ॥ २ ॥
दृष्टिरागे चले चित्तथी, फरे नेत्र विकराले ॥
पूर्व उपकार न साजरे, पमे [illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] ॥

जिन करी जगजने आदर्यो, इहां मोह अति घूनो॥४॥
रुद्धि हजार रमणी तजी, जजी आप मति रागो॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी जवजल तागो ॥ ५ ॥
वली आचार्य सावद्य जे, हुउं अनत ससारो॥
दृष्टिरागे समतो पण थयो, महा निशीथ विचारो ॥६॥
लुप जिनधर्म आशातना, अनाग्यु कहे रगे ॥
महु आगळे जिनवरे, वदीठ जगवइ अंगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहनो जोगो ॥
दृष्टिराग मिल्यो तेहनो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोठमी मीठमी, इहीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रुलीयामणा, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम उपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
एहमा एक तुमे आदरो, जलो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ ठेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध सवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अन्यतरथी चूके ॥ १ ॥

कपटी कहिया एह जिणदे, दुष्टनु नाम न लीजे ॥ ए आकणी ॥ पीला कपडा खचें धावली, फाख देखाडी घोले ॥ तरुणी सुदर देखी विशेषे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पडघा मान करावे ॥ खाजा त्रहोरे खात करीने, पूरीने वोमि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे जाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ नात कूटवा सार्थे हींडे, श्राविका ने दश वार ॥ यात्राने मिष पर्णी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥पाशेर घीथी करे पारणु, वली खावे अधशेर ॥ तोही ताजा इणिपरें वोले, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ वगलानी परें पगला माडे, आडु डोढु जोवे ॥ महिला सार्थे घोले मीठु, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारागे वस्त्रनो जाख्यो, श्वेतने मानो पेर्ने ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंगे हेतें ॥ क० ॥ ८ ॥ वाजीगर जेम वाजी खेले, धीजरे माडी जाल ॥ ते सवेगी सूधामत जाणो, ए सहु आल जजाल ॥ क० ॥ ए ॥ ऊंचु घर अगोचर होवे, मासकल्प तिहा कीजे ॥ सुख सातायें पडिलेहण चाले, साधु जन्म फल लीजें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

मलीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कथाना कर्मज बांधे, मनमां थइ उजमाल ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हे महिला-ने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहोतो, अम तुम मलशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तव ते कामिनी हसीने बोले, साचु कहो छो स्वाम ॥ गच्छवासी गुरु आवीने वहशे, तव तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ ॥ नीचु जोइने इणि परें चाले, जणावानो तप कीजे ॥ मानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजे ॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पथें चाले, शहेरमा नीचू जोवे ॥ गरुधरु गाडानी परें चाले, जिनशासनने वगोवे ॥ क० ॥ १५ ॥ रुमाल पाठा रुडां वेचे, जूना हाथमा काले ॥ तृष्णा तांये किमहि न मूके, वली जाणे कोइ आले ॥ क० ॥ १६ ॥ छकाय जीवनो दाह करावे, गाम गाम पाप वधावे ॥ आंबिल तपनु थोतु दाइने, काइ अमने वहोरावे ॥ क० ॥ १७ ॥ कदाग्रहगा पहेला मतनो, एहने लागे दोष ॥ मृषावाद तो पग पग बोले, तेहनो न करे शोष ॥ क० ॥ १८ ॥ अदत्त वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा मतनी वात छे मोटी, तेहमा काम जगावे ॥ क० ॥ १९ ॥ विधवा पासे लिङ्ग थइने, काम कुसगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सेवे,

चोथा व्रतने त्यागे ॥ क० ॥ २० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह मांहे, प्रौढां पातक बांधे ॥ रासजनी परें लोथ्या हींडे, वली उघाडे खांधे ॥ क० ॥ २१ ॥ छठ अठमादिने अठाइ, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रें खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ क० ॥ २२ ॥ नगर पिंडो लीया पहने विरलज, पासथ्या थइ बेसे ॥ चोराशी गछ वहोरी खावे, महोटा घरमां पेसे ॥ क० ॥ २३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोले, आंख करे छे बाथा ॥ मांहो मांहे साने समजे, आखे करे छे टाथा ॥ क० ॥२४॥ ए कपटी नो सग निवारो, जेणे ए जेम वगोयो ॥ वेस उथापी महा ए जूडो, मनुष्य जन्म फल खोयो ॥ क० ॥ २५ ॥ आदि थकी अरिहंत आचारज, उपाध्याय ने साधु ॥ बोले जेखे सहु एम बोले, थाहने आराधु ॥ क० ॥ २६ ॥ मूल पथ मिथ्यात्वें चाले, समजतो नही लेश ॥ जिन मतनो मारग ढांकीने, कलहो करे विशेष ॥ क० ॥ २७॥ आपमतीनो संग तजीने, साधु वचने रहियें ॥ वाणी वाचकजस एम बोले, जिनाज्ञा शिर वहियें ॥क०॥२८॥

॥ अथ श्री साधुगुण सझाय ॥

॥ विनय करीजेरे जवियण जावसुं —ए देशी ॥

॥ पांचे इंद्रीरे अहनिस वस करें, पाले नवविध

मलीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कथानां कर्मज बांधे, मनमां थइ उजमाल ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिला-ने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहोतो, अम तुम मलशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तव ते कामिनी हसीने बोले, साचु कहो छो स्वाम ॥ गछवासी गुरु आवीने वढशे, तव तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ ॥ नीचुं जोइने इणि परें चाले, जयणानो खप कीजे ॥ नानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजे ॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पथें चाले, शहेरमा नीचु जोवे ॥ गरुयरु गाडानी परें चाले, जिनशासनने वगोवे ॥ क० ॥ १५ ॥ रुमाल पाछां रुडा वेचे, जूना हाथमा काले ॥ तृष्णा तोये किमहि न मूके, वली जाणे कोइ आले ॥ क० ॥ १६ ॥ छकाय जीवनो दाह करावे, गाम गाम पाप वधावे ॥ आंबिल तपनु ओठु दइने, काइ अमने वहोरावे ॥ क० ॥ १७ ॥ फदामइगा परेगा व्रतनो, पहने लागे दोष ॥ मृषावाद तो पग पग वावे, तेहनो न करे शोष ॥ क० ॥ १८ ॥ अदत्त वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा व्रतनी वात छे मोटी, तेरमा काम जगावे ॥ क० ॥ १९ ॥ विधवा पासे विह्वल थइने, काम कुसंगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सेवे,

चोथा व्रतने त्यागे ॥ क० ॥ २० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह, मांहे, मोटां पातक बांधे ॥ रातजनी परें छोड्या हींडे, वली उघाडे खांधे ॥ क० ॥ २१ ॥ छठ अठमादिने अठाइ, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रे खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ क० ॥ २२ ॥ नगर पिंडो लीया पडने विरक्तज, पासत्था थइ बेसे ॥ चोराशी गछ घहोरी खावे, मदोटा घरमां पेसे ॥ क० ॥ २३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोले, आंख करे छे चाखा ॥ मांहो मांहे साने समजे, आखे करे छे टाचा ॥ क० ॥२४॥ ए कपटी नो संग निवारो, जेणें ए जेम वगोया ॥ वेस उथापी महा ए चूडो, मनुष्य जन्म फल खोयो ॥ क० ॥ २५ ॥ आदि थकी अरिहत आचारज, उपाध्याय ने साधु ॥ बोले जेवे सहु एम बोले, वाहने आराधु ॥ क० ॥ २६ ॥ मूल पथ मिथ्यात्वें चाले, समजतो नही लेश ॥ जिन मतनो मारग ठामीने, कलहो करे विशेष ॥ क० ॥ २७॥ आपमतीनो संग तजीने, साधु वचने रहियें ॥ वार्या वाचकजस एम बोले, जिनाज्ञा शिर वहियें ॥क०॥२८॥

॥ अथ श्री साधुगुण सद्याय ॥

॥ विनय करीजेरे जवियण जावसुं —ए देशी ॥

॥ पांचे इंद्रीरे अहनिस वस करें, पाले नवविधि

नसीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कथानां कर्मज बांधे, मनमां थइ उजमाल ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिला-ने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहोतो, अम तुम मळशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तब ते कामिनी हसीने बोले, साचु कहो छो स्वाम ॥ गछवासी गुरु आवीने वढशे, तव तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ ॥ नीचुं जोइने इणि पेरें चाले, जणवानो खप कीजे ॥ नानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजे ॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी पेरें पथें चाले, शहेरमां नीचु जोवे ॥ गरूयम गाडानी परें चाले, जिनशासनने वगोवे ॥ क० ॥ १५ ॥ रुमाल पाठां रुडा वेचे, जूनां हाथमा फाले ॥ तृष्णा तोये किमहि न मूके, वली जाणे कोइ आले ॥ क० ॥ १६ ॥ छकाय जीवनो दाह करावे, ठाम ठाम पाप वधावे ॥ आबिल तपनुं ओतु डाइने, काइ अमने वहोरावे ॥ क० ॥ १७ ॥ कदाग्रहगा पहेला व्रतनो, वहने लागे दोष ॥ मृषावाद तो पग पग बोले, तेहनो न करे शोष ॥ क० ॥ १८ ॥ अदत्त वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा व्रतनी वात छे मोटी तेहमा काम जगावे ॥ क० ॥ १९ ॥ विधवा पासें ति- ल थइने, काम कुसंगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सें

चोथा व्रतने लागे ॥ क० ॥ २० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह, मांहे, प्रौढां पातक बांधे ॥ रासजनी परें लोब्धा हींडे, वली उघाडे खांधे ॥ क० ॥ २१ ॥ छठ अट्ठमादिने अठाइ, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रे खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ क० ॥ २२ ॥ नगर पिंडो लीया पछे निरलज, पासथ्या थइ बेसे ॥ चोराशी गछ वहोरी खावे, महोटा घरमां पेसे ॥ क० ॥ २३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोले, आंख करे छे बाबा ॥ मांहो मांहे साने समजे, आखे करे छे टाबा ॥ क० ॥२४॥ ए कपटी नो संग निवारो, जेणे ए जैन वगोयो ॥ वेश उथापी महा ए जूठो, मनुष्य जन्म फल खोयो ॥ क० ॥ २५ ॥ आदि थकी अरिहंत आचारज, उवाज्झाय ने साधु ॥ बोले जेवे सहु एम बोले, वारुने आराधु ॥ क० ॥ २६ ॥ मूल पंथ मिथ्यात्वें चाले, समजनो नहीं लेश ॥ जिन मतनो मारग छांडीने, कलहो करे विशेष ॥ क० ॥ २७॥ आपमतीनो संग तजीने, साधु वचने रहियें ॥ वार्षी वाचकजस एम बोले, जिनाज्ञा शिर वहियें ॥क०॥२८॥

॥ अथ श्री साधुगुण सझाय ॥

॥ विनय करीजेरे चविपण जावसुं —ए देशी ॥

॥ पांचे इडीरे अ

मलीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कयाना कर्मज बांधे,
मनमां थइ उजमाल ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिला-
ने तेडे, हसीने पूछे बात ॥ अढारमो उपधान वहोतो,
अम तुम मलशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तब ते कामिनी
हसीने बोले, साचु कहो छो स्वाम ॥ गछवासी गुरु
आवीने वढशे, तब तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ ॥
नीचुं जोइने इणि परें चाले, जणवानो तप कीजे ॥
नानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजे
॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पथें चाले, ... हांजी ॥ सूर
जोवे ॥ गकचक गाढाजी ...
... ल आशातना, ऊंची कर वे वाहोजी ॥ क०
॥ क०
॥ परपासालेजी मेला कापका, निरमिर वरसे निरोज
ष ॥ मांस मसादिक परिसह अति घणा, सहे ते सा
श सधीरोजी ॥ क० ६ ॥ समकित मानसरोवर किमता
ठ चारित्र घनराक वासोजी ॥ तप जप संजम स्वा
श निरमला, पाले पाले मनने उल्लासोजी ॥ क० ७ ॥
चारित्र परिसहारे निपमा जे सहे, महीयल करे विहा
रोजी ॥ खिमाखडग टेइ मुनिवर कर धरे, उपसम
रस भंडारोजी ॥ क० ८ ॥ मधुकरनी परें मुनिवर
गोचरी, विहरे विहरे सुझतो आहारोजी ॥ ते पण
निरस नें वली, पोषणो दीयें दीयें देह आधारोजी ॥

चोथा व्रतने लागे ॥ कु० ॥ २० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह, मांहे, मोटां पातक बांधे ॥ रासजनी परें लोच्या हींडे, धर्मी उघाडे खांधे ॥ कु० ॥ २१ ॥ छठ अठमादिने छठाइ, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रें खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ कु० ॥ २२ ॥ नगर पिंडो लीया पछे निरलज, पासथ्या थइ बेसे ॥ चोराशी गछ घरोरी खावे, महोटा घरमां पेसे ॥ कु० ॥ २३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोले, ध्यान करे छे बाधा ॥ मांहो मांहे ~~~ ॥ अैथकरे छे टाया ॥ कु० ॥२४॥ ए कपटी ॥ जेखरे उतारो राजा नरयरा ॥ नेम उथापी

पचमहाव्रत जे धरे ॥ टाले पाप अढारोरे ॥ त्रिविध परिसह जे सहे ॥ नव कल्प करे विहारोरे ॥ एहवा मुनिवर वदिये ॥ जिम लहिये भवनो पारोरे ॥ केसी गुरु परदेशी जिम ॥ भव पमनां दिये आधारोरे ॥ आंकणी ॥ एहवा० ॥ १ ॥ घरे नेहे तप तपे ॥ पाले पचाचारोरें ॥ निंदक पूजक सम गिणे ॥ रोस न करे लिगारोरे ॥ एहवा० २ ॥ कोइ छेदे वांसले ॥ चदन कोइ लगावेरे ॥ विहुपर समता मन धरे, भावना भावे भावेरे ॥ एहवा० ३ ॥ बाडीस विहु परी आगला, दोष रहित ले आहारोरे ॥ संविभाग मुनिने करे ॥

मळीने, गावे गीत रसाळ ॥ चार कथाना कर्मज वाधे, मनमां थइ उजमाळ ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिला-ने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहोतो, अम तुम मळशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तव ते कामिनी हसीने बोले, साचु कहो छो स्वाम ॥ गछवासी गुरु आवीने वदशे, तव तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ नीचुं जोइने इणि परें चाले, जणवानो खप कीजे नानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा ली ॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पथें चाले, शहेरमां जोवे ॥ गरुयरु गाडानी परें चाले, जिनशा[illegible] ॥ क० ॥ १५ ॥ रुमाल पाठां [illegible] फाळे ॥ तृष्णा तोये फि[illegible] आळे ॥ क० ॥ १६ [illegible] ठाम पाप वधावे ॥ [illegible] अनने वहोरावे । [illegible] ननो, पढ़ने ला [illegible] तेहनो न करे शो [illegible] थइने, साधार [illegible] तेहमां काम [illegible] स थइने, [illegible]

कपटी कहिया एह जिणंदे, दुष्टनुं नाम न लीजे ॥ ए
आंकणी ॥ पीळां कपडां मनने धारवां, फारस देखाडी
भोळे ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वांचवा
खोले ॥ क० ॥ २ ॥ वेंढा देखी काढे पडघो, पडघा
गान करावे ॥ माजा रहोरे स्नान करीने, पूरीने वोमि
रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म
परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनुं नाम न लीजे, इम दशसूत्र
जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ नाक कूटवा सार्थें हींडे, आ-
सिया छे दश वार ॥ वाघ्राने मिष पणी परें विचरे,
दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर पीवी करे पारणुं,
पछी त्यारे अधशेर ॥ तोहो सात इणिपरें पोखे,
उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ बगलानी परें पगला
माडे, आडु होडु जोवे ॥ मद्रिका सार्थें बोले मीठुं,
वासुदेव वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगें वचनो नांख्यो,
ओघने मारो वेमें ॥ तेनो मारग दूरें मूक्यो, कपटी रंगे
ऐम ॥ क० ॥ ८ ॥ पाणीगर जेम पाणी मेले, भीतरे
कोरी जाय ॥ ते सपेनी सुधारण जाणो, ए बहु म्याय
अज्ञात ॥ क० ॥ ९ ॥ ढंढु पर [illegible]
हर लिहां कांमे ॥ सुख सात रे [illegible]
[illegible] लीमें ॥ क० ॥ १० ॥ [illegible]

जिन करी जगजने आदर्यो, इहां मोह अति धूगो॥४॥
रुद्धि उदार रमणी तजी, तजी आप मति रागे॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी तत्त्वज्ञ तागो॥५॥
घणी आचार्य सावद्य जे, हुओ अनंत संसारो॥
दृष्टिरागे समती पण गयो, महा निशीथ विचारो॥६॥
लुप जिनधर्म आशातना, अनाएयु कहे रंगे॥
महु आगळे जिनवरे, वदीओ जगवइ अंगे॥७॥
गामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो॥
दृष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक लोगो॥८॥
आपण गोठमी मीठमी, इहीने मन लागे॥
ज्ञानी गुरु वचन रसीयामणा, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम ऊपजे, ज्ञान वधे गुणरागे॥
एहमा एक तुमे आदरो, जलो होय जे आगे॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ ठेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यंतरथी चूके ॥१॥

कपटी कहिया एह जिणदे, तुम्हनुं नाम न लीजे ॥ ए आकणी ॥ पीला कपडा खजे धावली, काख देखाडी घोले ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी कांदे पडघो, पडघा गान करावे ॥ खाजा ग्होरे खात करीने, पूरीने वोनि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ ताज कूटरा साथें हींडे, श्राविका ते दश चार ॥ याग्राने मिष पणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणु, पली खावे अधशेर ॥ तोड़ी ताजा इणिपरें चोवे, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ वगलानी परें पगलां माडे, आडु ओडु जोवे ॥ महिला साथें बोले मीठु, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगे वस्त्रनो भाख्यो, श्वेतने मानो पेरें ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंगे हेतें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, धींगरे माडी जाल ॥ ते सवेगी सूधामत जाणो, ए सहु आल जजाल ॥ क० ॥ ९ ॥ उंचु घर अगोचर होवे, मासकल्प तिहां कीजे ॥ सुख साताये पडिलेहण चाले, साधु जन्म फल लीजे ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

जिन करी जगजने आदर्यो, इह्वा मोह अति घणो॥४॥
रुद्धि उदार रमणी तजी, जजी आप मति रागो ॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी नरजन्म तागो ॥ ५ ॥
वली आचार्य सावद्य जे, हुर्ड अनंत संसारो॥
दृष्टिरागे समलो पण थयो, महा निशीथ विचारो ॥६॥
लुप्त जिनधर्म आशातना, अनाद्यु करे रंगे ॥
सहु आगले जिनवरे, वदीत्त नगवइ अंगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिलयो जेहवो जोगो ॥
दृष्टिराग मिलयो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोठमी मीठमी, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रलीयामणां, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम उपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
एहमा एक तुमे आदरो, जलो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ ठेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अन्यंतरथी चूके ॥ १ ॥

कपटी कहिया एह जिणदे, दुष्टनु नाम न लीजे ॥ ए आकणी ॥ पीला कपडा रत्ने धावली, काख देखाडी बोले ॥ तरुणी सुदर देखी विशेपे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पहघा मान करावे ॥ खाजा व्होरे खात करीने, पूरीने वोनि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिर्षे उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ नाउ कूटवा साथें हींडे, श्राविका ले दश वार ॥ याम्राने मिष एणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीश्री करे पारणु, पक्षी खावे अधशेर ॥ तोही ताजा इणिपरें बोले, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ बगज्ञानी परें पगला माडे, आडु डोलु जोवे ॥ महिला सार्थे बोले मीठु, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारागे वस्त्रनो भाख्यो, श्वेतने मानो पेनें ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंग हेनें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, धीजरे माडी जाल ॥ ते संवेगी सूधामत जाणो, ए सहु आल जजाल ॥ क० ॥ ए ॥ ऊंचु घर अगोचर होवे, मासकल्प तिहा कीजे ॥ सुख सातायें पडिलेहण चाखे, साधुनु फल लीजें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

जिन करी जगजने आदर्यो, इम्ह मोह अति भूंडो॥४॥
रुद्धि हजार रमणी तजी, जजी आप मति रागो ॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी नवजस तागो ॥ ५ ॥
घणी आचार्य सावद्य जे, हुउं अनत ससारो॥
दृष्टिरागे समतो पण थयो, महा निशीथ विचारो ॥६॥
कुप जिनधर्म आशातना, अनाण्यु करे रगे ॥
मह्य आगळे जिनवरे, वदीत नागइ अगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिळ्यो जेहवो जोगो ॥
दृष्टिराग मिळ्यो तेहनो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोळ्मी मीठ्डी, इहीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रलीयामणा, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम ऊपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
एहमा एक तुमे आदरो, जलो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ ठेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध सवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यतरथी चूके ॥ १ ॥

कपटी कहिया एह जिणदे, दुष्टनुं नाम न लीजे ॥ ए आकणी ॥ पीला कपडा रत्ते धावली, काख देखाडी बोले ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पडघा मान करावे ॥ खाजा उढोरे खांत करीने, पूरीने वोनि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषे उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ ताल कूटवा साथे हींडे, श्राविका छे दश वार ॥ यात्राने मिष एणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणुं, वली खावे अधशेर ॥ तोही ताजा इणिपरें बोले, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ बगलानी परें पगलां माडे, आडु डोलु जोवे ॥ महिला साथें बोले मीठुं, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगे वस्त्रनो जाव्यो, श्वेतने मानो येनें ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंगे हेनें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, भीतरे माडी जाल ॥ ते सवेगी सुधामत जाणो, ए सहु आल जजाल ॥ क० ॥ ९ ॥ उंचु घर अगोचर होवे, मासकल्प तिहां कीजे ॥ सुख साताये पडिलेहण चाले, साधु जन्म फल लीजें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

जिन करी जगजने आदर्यो, इस्यो मोह अति भूनो॥४॥
ऋद्धि भंडार रमणी तजी, नजो आप मति रागे ॥
दृष्टिरागे जमाली सह्यो, नवी जगजस लागो ॥ ५ ॥
वली आचार्य सावद्य जे, हुओ अनंत ससारो॥
दृष्टिरागे समतो पण थयो, मह्या निशीथ विचारो ॥६॥
कुण जिनधर्म आशातना, अनाणगु करे रंगे ॥
मह्यु आगळे जिनवरे, पदीत्र जगवइ अंगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिळ्यो जेहवो जोगो ॥
दृष्टिराग मिळयो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोठली मीठली, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रसीयामणा, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम उपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
पहमा एक तुमे आदरो, जसो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ हेडो नाज़ी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यंतरथी चूके ॥ १ ॥

कपटी कहिया एह जिणदे, दुष्टनु नाम न लीजे ॥ ए आकणी ॥ पीला कपडा खचे धावली, काख देखाडी बोले ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पडघा गान करावे ॥ खाजा नहोरे खात करीने, पूरीने बोनि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषे उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ नाठ कूटवा साथें हींडे, श्राविका छे दश वार ॥ यात्राने मिष पणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणु, पछी खावे अधशेर ॥ तोही ताजा इणिपरें बोले, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ बगध्यानी परें पगला माडे, आडु डोडु जोवे ॥ महिला साथें बोले मीठु, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगे वस्त्रनो जांच्यो, श्वेतने मानो वेषें ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडां रंगे ऐषें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, भींतरे मांही जाल ॥ ते संवेगी सुधा मत जाणो, ए सहु आल जजाल ॥ क० ॥ ९ ॥ ठंचु पर आगोचर होवे, गालफ-डा निर्दा कीधे ॥ मुख साधावे परिग्रह पावे, साधु इन्न पञ्च लीमें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

जिन करी जगजने आदर्यो, इस्यो मोह अति भूंडो॥४॥
ऋद्धि उदार रमणी तजी, तजो आप मति रागो ॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी नरजन्म तागो ॥ ५ ॥
पछी आचार्य सावद्य जे, हुओ अनंत संसारो ॥
दृष्टिरागे समती पण थयो, महा निशीथ विचारो ॥६॥
हुए जिनधर्म आशातना, अनाणुं कहे रंगे ॥
मद्दु आगळे जिनवरे, पदीठ भगवइ अंगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिळ्यो जेहवो जोगो ॥
दृष्टिराग मिळ्यो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोठडी मीठडी, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रसीयामणा, कटुक तीरसा वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम ऊपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
एहमा एक तुमे आदरो, जसो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुओ, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ वेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यंतरथी चूके ॥ १ ॥

कपटी कहिया एह जिणंदे, दुष्टनुं नाम न लीजे ॥ ए आंकणी ॥ धोला कपडा खचे धावली, काख देखाडी थोडे ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वाचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ वेंढा देखी काढे पडघो, पढघा गान करावे ॥ खाजा लड्डुरे खात करीने, पूरीने वोनि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनु नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भाखे ॥ क० ॥ ४ ॥ नाड कूटवा साथें हींडे, आ- खिरा छे दश वार ॥ वाघाने मिष पणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीनी करे पारणु, वली ल्यारे अधशेर ॥ तोटी ताबा इणिपरें थोडे, छपराने आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ वगडानी परें पगलां मांडे, आहुं टोडु जोवे ॥ महिला साथें थोडे मीठु, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगे वस्त्रनो जाण्यो, अंगने मानो पेमें ॥ तेनो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंगे हेमें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, धीवरे काढी जार ॥ ते स्वेच्छी कुपात्र जाणो, ए सहु आश्र जजाल ॥ क० ॥ ९ ॥ इंद्रु पर स्त्रीगर होवे, मालफ- दा निद्रा बांधे ॥ मुख लागो परिग्रह पाखे, साधु पण्ड धीठे ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला